



अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-10

कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक

मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 23 मई से 29 मई 2018 तक

प्र.ज्येष्ठ शुक्ल नवमी से प्र.ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये

पृष्ठ संख्या 12

ईर्ष्या और

द्वेष ...

पृष्ठ- 2

डायबिटीज

व हृदय...

पृष्ठ- 4

भ्रूण हत्या

एक....

पृष्ठ- 5

अवधपुरी

यह चरित...

पृष्ठ- 8

धर्म

परिवर्तन....

पृष्ठ- 12

- पाकिस्तान के विघटन की नई बनती फाल्ट लाईन
- राजनैतिक कर्मजों का अभाव
- न्याय-प्रक्रियागत विलम्ब और बहस में व्यहहत दुर्बोध भाषा
- वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर भारत
- घुसपैठियों को बाहर करे सरकार

गौहत्याओं व लवजेहादियों पर कड़ी कार्रवाई करें पिन्नारायी सरकार-हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

त्रिसूर, केरल। केरल राज्य के त्रिशूर प्रेस क्लब में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में बोलते हुए अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने केरल में हिन्दुओं के उत्पीड़न, लवजेहाद द्वारा हिन्दू लड़कियों का शोषण व गौहत्या के लगातार जारी रहने पर चिंता प्रकट किया है तथा केरल के वाममोर्चा गठबंधन सरकार के मुखिया श्री पिन्नारायी से मांग की है कि केरल सरकार राज्य में हिन्दुओं के उत्पीड़न को बंद करे तथा लवजेहादियों और गौहत्याओं पर कड़ी कार्रवाई करे। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक ने आरोप लगाया है कि केरल की

शेष पृष्ठ 10 पर



राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने केरल प्रदेश हिन्दू महासभा कार्यालय का किया उद्घाटन

● संवाददाता ●

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने १३ मई को केरल के त्रिशूर शहर में अखिल भारत हिन्दू महासभा, केरल प्रदेश के कार्यालय का उद्घाटन फीता काटकर व दीप प्रज्ज्वलन कर दिया। प्रदेश कार्यालय पर उद्घाटन के लिये पहुंचने पर ढोल-नगाड़ों के साथ राष्ट्रीय पदाधिकारियों का स्वागत हुआ। केरल प्रदेशाध्यक्ष श्री किशन सीजे, प्रदेश महामंत्री श्री शिनाय श्री निवासन, त्रिमूर जिलाध्यक्ष श्री



सुमेश, जिला मंत्री श्री सुजीश पीबी, उपाध्यक्ष श्री रमेश, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर, पथानमतिठा जिलाध्यक्ष श्री सतीशन, पलक्कड़ जिलाध्यक्ष श्री सुकुमारन एम., जिलामंत्री श्री सतीश कुमार, उपाध्यक्ष श्री उन्नीकृष्णन वेंकटा, उपाध्यक्ष अस्मिजित त्रिशला, संयुक्त मंत्री श्री उन्नीकृष्णन कोलपाउम आदि ने राष्ट्रीय अध्यक्ष व राष्ट्रीय महामंत्री का फूल-मालाओं तथा अंगवस्त्रम पहनाकर स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक ने भव्य कार्यालय की व्यवस्था के लिये केरल प्रदेश के पदाधिकारियों को धन्यवाद दिया तथा हिन्दुओं की रक्षा के लिये

शेष पृष्ठ 10 पर

जीवन का लक्ष्य भगवान का भजन

ब्रह्मलीन म० स्वामी वेदव्यासानन्द सरस्वती जी महाराज

जीवन का लक्ष्य प्रभु की कृपा से हमें मानव जीवन मिला है। मानव जीवन का आधारभूत लक्ष्य है—परम शान्ति, जीवन्मुक्ति एवं प्रभु की भक्ति प्राप्त कर लेना। हमें परम शान्ति प्राप्त हो गई—ऐसा तब माना जाता है जबकि हम दुःख, चिन्ता, भय, निराशा, अभाव, मानसिक तनाव आदि विकारों से सदा के लिये सर्वाश में मुक्त हो जाय, प्रतिकूल से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हमें लेशमात्र भी दुःख न हो, हम शान्त तथा प्रसन्न रहें और प्रभु को भूलें नहीं। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—**यस्मिन् स्थिततो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते। (६-२२)।**

अर्थात् भगवत्प्राप्ति रूप जिस अवस्था में स्थित हुआ योगी बड़े भारी दुःख से भी चलायमान नहीं होता। हमें जीवन्मुक्ति प्राप्त हो गई—ऐसा तब माना जाता है जबकि हमें अपने लिये किसी भी नाशवान वस्तु—व्यक्ति, परिस्थिति आदि की जरूरत महसूस न हो। हमें प्रभु की भक्ति प्राप्त हो गयी—ऐसा तब माना जाता है जबकि हमारे जीवन में प्रभु की अखंड स्मृति एवं अगाध प्रियता जाग्रत हो जाय।

लक्ष्य प्राप्ति का उपाय—परम शान्ति, जीवन्मुक्ति एवं प्रभु की भक्ति का अमोघ उपाय है—भगवान का भजन और भगवान का विश्वास।

भगवान का भजन—शरीर, इन्द्रियां एवं सांसारिक वस्तुओं की सहायता से हम जो पारमार्थिक कर्म करते हैं, वे सब भजन की परिभाषा में शामिल किये जा सकते हैं, जैसे जप, तप, पाठ, पूजा, तीर्थ, व्रत, दान, उपवास, यज्ञ, सत्-चर्चा, सत्-कार्य, सत्-चिन्तन, कीर्तन, सद्ग्रन्थों का अध्ययन, सात्त्विक ध्यान आदि।

भगवान का विश्वास—हमने भगवान को देखा नहीं, हम भगवान को जानते नहीं, लेकिन भगवान के बारे में सब ग्रन्थों में जो कुछ सुना है। गुरुवाणी, ग्रन्थवाणी, सन्तवाणी और भक्तवाणी में पढ़ा और सुना है कि भगवान कैसे हैं, उनकी कितनी महिमा है, वे कितने समर्थ, करुणा सागर, पतित पावन अधम—उद्धारण, दीनबन्धु, दीनानाथ, क्षमा सिन्धु हैं। प्रभु के बारे में हमने जो कुछ सुना है उसे वैसा का वैसा ही मान लेना, उसमें देखे हुए की भांति अविचल आस्था कर लेना, उसे स्वीकार कर लेना ही भगवान का विश्वास कहलाता है।

भजन एवं विश्वास में अन्तर—भगवान का भजन एवं भगवान का विश्वास ये दोनों ही पवित्रतम कार्य हैं, दोनों से परम लाभ होता है, दोनों ही करणीय हैं, लेकिन इन दोनों में निम्न सूक्ष्म अन्तर है—

(१) भजन शरीर तथा इन्द्रियों के द्वारा किया जाने वाला एक विशेष पारमार्थिक कर्म है, जबकि विश्वास 'स्व' के द्वारा की जाने वाली एक 'स्वीकृति' है।

(२) भजन में कुछ न कुछ करना होता है, विश्वास में केवल मानना होता है, करना कुछ भी नहीं होता।

(३) भजन प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता। जो भाई—बहन अत्यन्त वृद्ध हैं, किसी शारीरिक रोग से पीड़ित हैं जिनकी इन्द्रियां कमजोर हो गई हैं—उन्हें भजन करने में कठिनाई महसूस होती है। किन्तु भगवान का विश्वास सभी भाई बहन कर सकते हैं।

(४) शरीर तथा इन्द्रियों के द्वारा लगातार भजन करने में कठिनाई हो सकती है। किन्तु प्रभु विश्वास के आधार पर 'स्व' से स्वतः होने वाला भजन लगातार, अखंड रूप से किया जा सकता है।

(५) प्रत्येक परिस्थिति में भजन करने में असुविधा हो सकती है। शारीरिक कमजोरी, निद्रा, भीषण प्रतिकूलता, कार्य की अधिकता, भयंकर बीमारी आदि परिस्थितियों में भजन शिथिल हो जाता है, परन्तु हर परिस्थिति में प्रभु का विश्वास किया जा सकता है।

(६) भजन एक प्रकार का पारमार्थिक कर्म है, इसे करने में समय अपेक्षित है। जो भाई—बहन सांसारिक कार्यों में अत्यन्त व्यस्त हैं, वे भजन के लिये पर्याप्त समय नहीं निकाल पाते। विश्वास एक स्वीकृति है, अतः इसमें एक पल भी नहीं लगता। व्यस्त से व्यस्त मानव भी विश्वास कर सकता है।

प्रभु विश्वास से दुःख चिन्ता, भय आदि तत्काल मिटते हैं, प्रभु तुरन्त मिलते हैं। जिस क्षण भी प्रभु में विश्वास

शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस वक्त आप—अपने आस—पास के लोगों पर अत्यधिक विश्वास न करें अन्यथा आगे चलकर दिक्कत आ सकती है। पिता व पुत्र में चला आ रहा वैचारिक मतभेद शीघ्र ही समाप्त हो जायेगा। अपनी धीमी गति वाली कार्यशैली थोड़ा तेजी लानी होगी।

वृष : इस सप्ताह कुछ लोगों को गैर सरकारी संस्थाओं से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा। आपकी वाणी में गजब का आकर्षण आयेगा जिससे आपकी शासन व प्रशासन में गहरी पैठ बनेगी। जीवनोपयोगी वस्तुओं की खरीददारी करने का अवसर प्राप्त होगा।

मिथुन : इस सप्ताह किसी को भी झूठे आश्वासन न दें, अन्यथा आप की छवि खराब होने के आसार नजर नजर आ रहें हैं। आप—अपने परिवार के प्रति विशेष ध्यान दें तभी आप मानसिक रूप से स्वस्थ रह पायेंगे। सम्बन्धों की कद्र करने से ही रिश्तों में मजबूती आयेगी।

कर्क : इस सप्ताह कुछ लोगों को निरंतर परिश्रम करना पड़ेगा जिसे आप टालना चाहे तो भी टाल नहीं सकते हैं। सुनियोजित तरीके से किये गये कार्यों में आप सफल होंगे। मित्रों के साथ मनोरंजन करने के अवसर प्राप्त होंगे।

सिंह : इस सप्ताह घर व अफिस में सामंजस्य बिठा पाने में आप अक्षम रहेंगे। जिसके कारण कई समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इस सप्ताह आपके पास कोई ऐसा प्रस्ताव आयेगा जिसके दूरगामी परिणाम अत्यन्त शुभ रहेंगे। पारिवारिक सदस्यों के साथ हँसी—मजाक में समय व्यतीत होगा।

कन्या : इस सप्ताह आर्थिक उपलब्धियों के लिये नकारात्मक व भावनात्मक सौंच को बदलना ही हितकर रहेगा। इस सप्ताह नए लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। सन्तान के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को बखूबी निभायें अन्यथा टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

तुला : इस सप्ताह कुछ लोगों के रूके हुये कार्यों को लेकर काफी चिन्तित रहेंगे। कुछ कर्तव्यों का भार बढ़ने की सम्भावना है। पत्नी के सहयोग से पारिवारिक स्थितियाँ अनुकूल रहेगी। घनिष्ठ सम्बन्धों के प्रति सक्रियता बनायें रखें अन्यथा दूरियाँ बढ़ सकती हैं।

वृश्चिक : किसी समस्या को सुलझाने में काफी मशक्कत करनी पड़ेगी। इस सप्ताह दिल से नहीं बल्कि दिमाग से कार्य करने की आवश्यकता है। सन्तान के स्वास्थ्य को लेकर मन चिन्तित रहेगा। अनचाहे सम्बन्धों को ढोने के प्रयास विफल साबित होंगे।

धनु : इस सप्ताह कुछ लोगों को मन की चंचल अवस्था पर काबू पाना आवश्यक है। जैसे—२ अपने—आपको केन्द्रित करेंगे वैसे—२ आपके कार्य करने की क्षमता में वृद्धि होगी। आपकी स्वतन्त्र विचारधारा मुश्किलों को आसान कर देगी। बिना मांगे राय देना आपके लिए हितकर नहीं है।

मकर : इस सप्ताह आप पुरानी व्याधियों से मुक्ति पाने में काफी हद तक सफल होंगे। कुछ लोगों को दूर की यात्रा करनी पड़ सकती है। राजनैतिक लोगों के साथ कुछ समय व्यतीत होने के संकेत हैं। धैर्य व साहस आपकी पहचान इसे बरकरार बनायें रखना अतिआवश्यक है।

कुम्भ : इस सप्ताह आपके मन में सन्तान के प्रति उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते हैं। आप—अपनी स्पष्टवादी बातों पर नियन्त्रण करें अन्यथा परिवार में किसी से खटपट हो सकती है। छात्र अपने दोस्तों से ज्यादा वफादारी न निभायें। रूके हुये धन के प्रति सक्रियता बनायें रखें।

मीन : इस सप्ताह घरेलू व सामाजिक कार्यों में सामंजस्य बिठा पाने में कठिनाई होगी। आप उदार एवं सरल स्वभाव न रखें क्योंकि इससे आप ठगे जा सकते हैं। कानून व नियम का पालन करें तथा अपने हितों के लिये अनुशासन न तोड़ें।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवद् गीता

अथ सप्तदशोऽध्यायः

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः।

तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः॥

अर्जुन बोले— हे कृष्ण! जो मनुष्य शास्त्रविधि को त्यागकर श्रद्धा से युक्त हुए देवादि का पूजन करते हैं, उनकी स्थिति फिर कौन—सी है? सात्त्विकी है अथवा राजसी किंवा तामसी?।।१।।

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा।

सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु॥

श्री भगवान् बोले—मनुष्यों की वह शास्त्रीय संस्कारों से रहित केवल स्वभाव उत्पन्न श्रद्धा सात्त्विकी और राजसी तथा तामसी—ऐसे तीनों प्रकार की ही होती है। उसको तू मुझसे सुन।।२।।

सत्त्वानुरुपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत।

श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः॥

हे भारत! सभी मनुष्यों की श्रद्धा उनके अन्तःकरण के अनुरूप होती है। यह पुरुष श्रद्धामय है, इसलिये जो पुरुष जैसी श्रद्धावाला है, वह स्वयं भी वही है।।३।।

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः।

प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः॥

सात्त्विक पुरुष देवोंको पूजते हैं, राजस पुरुष यक्ष और राक्षसों को तथा अन्य जो तामस मनुष्य हैं, वे प्रेत और भूतगणों को पूजते हैं।।४।।

अध्यक्षीय

सम्पादकीय

ईर्ष्या और द्वेष से मुक्ति ही भक्ति

ईर्ष्या एक मानसिक विकार है। यह विकार इतना तीव्र और खतरनाक होता है कि व्यक्ति अपना विवेक भी खो लेता है। यह एक ऐसा रोग है जो दूसरों के लिये तो हानिकारक है ही, स्वयं के लिये भी खतरनाक है। चिन्तक काका कालेकर ने ठीक कहा है कि, काम, क्रोध और भय के कारण शरीर में जो विकृतियाँ पैदा होती



है और कभी-कभी जो रोग पैदा होते हैं, उसका कोई प्रमाण तो है नहीं। ईर्ष्या उदर पीड़ा पैदा करती है। इसका कोई आहारजनित कारण नहीं होता, ईर्ष्या के कारण पीड़ा होने लगती है। इसके अतिरिक्त उच्च रक्त चाप, हृदयरोग आदि भी ईर्ष्या के ही कारण हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि, ईर्ष्या इतना खतरनाक हथियार है जो दूसरों की हिंसा करने तक प्रेरित करता है और स्वयं का आत्मबल भी कमजोर कर देता है। जो व्यक्ति ईर्ष्या से प्रेरित होता है, वह सदा तनावग्रस्त रहता है, और उनके पास विनम्र शब्दों का अभाव होता है। इस नाते हमारे ऋषियों से अध्यात्म और स्वस्थ समाज की रचना के लिये ईर्ष्या से निवृत्त का आदेश दिया है। सन्त ने ईर्ष्या के विषय कि, ईर्ष्या करने ईर्ष्या की बला ही क्योंकि ईर्ष्या ईर्ष्या को छोड़ भी उनका पीछा

राष्ट्रीय उद्बोधन

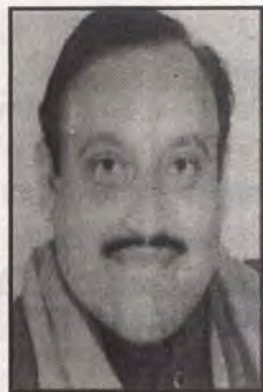
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

तिरुवल्लुवर में लिखा है वालों के लिये काफी है करने वाला दें तो भी ईर्ष्या कभी नहीं

छोड़ती। वह सर्वनाश कर देती है। तुरन्त ईर्ष्या दरिद्रतारूपी दानव को बुलाकर मनुष्य को नरक के द्वार तक पहुँचा देती है। वेदों में ऋषि कहते हैं कि, कभी किसी दूसरे की वस्तुओं को देखकर ईर्ष्या मत करो। जो कुछ आप के पास है, उसमें भी प्रसन्न रहने का प्रयास होना चाहिये। इस भाव से ईर्ष्या का जन्म नहीं होता। मनोवैज्ञानिक डा० संजय गोस्वामी ने ईर्ष्या भाव आत्महीनता और प्रयासहीनता की संज्ञा दी है। जो व्यक्ति अपनी उन्नति करने में स्वयं का अक्षम समझता है या उनके प्रयास पवित्र नहीं होते, वह ईर्ष्या को पाप देता है। ईर्ष्या हिंसा और क्रोध का मिश्रण है। ईर्ष्या से पीड़ित व्यक्ति मौन रहकर भी हानि पहुँचा सकता है। खुद विद्वान ईर्ष्या को अहंकार की सन्तान कहते हैं। जो अहंकारी होता है, वह यह स्वीकार नहीं करता कि कोई अन्य उसके समतुल्य हो जाये। वह प्रत्येक उस व्यक्ति के कार्यों में बाधा उत्पन्न करता है जो भविष्य में उसके लिये करता है जो भविष्य में उसके लिये चुनौती बन सकता है। अपमानित करना, आर्थिक हानि पहुँचाना, अपकीर्ति करना ईर्ष्या के चरण होते हैं। ईर्ष्यालु व्यक्ति को बहुत आनन्द और सन्तोष प्राप्त होता है, जब वह किसी के विरुद्ध अपकीर्ति का प्रचार करता है। हिन्दू दर्शन में ईर्ष्या और द्वेष को हिंसा की श्रेणी में रखा गया है। वेदों में ऋषि कहते हैं कि, हे मानव! तू पारम्पर सहयोग कर उन्नति के मार्ग पर आगे चल। दूसरों की उन्नति में सहायक हो, बाधा उत्पन्न मत कर। स्वयं की उन्नति की प्रेरणा उनसे ले जो पवित्र मार्ग पर चलते हुए सफलता के शिखर पर गये हैं। ईर्ष्याभाव एक विष है जो तन और मन दोनों को नष्ट कर देता है। इस नाते आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश की शर्त यह है कि ईर्ष्या जैसे अपवित्र भावों को मन से निकाल देना चाहिये। इस प्रकार द्वेष भी एक मानसिक दोष है। द्वेष रखने से पर निन्दा में सुख की अनुमति होने लगती है। इस नाते भारतीय जीवन दृष्टि में कहा गया है कि, व्यक्ति यह न देखे कि कितने लोग उससे अधिक सम्पन्न और शक्तिशाली हैं, वह यह देखे कि कितने लोग उससे निर्धन और निर्बल हैं। जब मन में उनके प्रति दया और करुणा के भाव का विकास होगा तो किसी अन्य के प्रति गलत भावों का विकास नहीं होता। हमारा एक बहुत उपयोग वैदिक सूत्र है। ऋषि कहते हैं कि 'आचारहीन न पुनन्ति वेदाः' अर्थात् जो आचार हीन हैं, उन्हें वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। पहली आवश्यकता है सदाचारी बनने की। सदाचार विनम्रता सिखाता है। विनम्र ईर्ष्या और द्वेष का नाश करती है। हिन्दू जीवन दृष्टि में ईर्ष्या और द्वेष जैसे तत्त्वों को राक्षसी दोषों में रखा गया है।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

घुसपैटियों को बाहर करे सरकार



सन् 1947 में जिन्नाह ने कहा था कि, पाकिस्तान तो मिल गया है, असम को भी हम लेकर रहेंगे। जिन्नाह जानता था कि, जिन लोगों के हाथों में भारत की बागडोर आयी है, वे पक्के और सच्चे नहीं हैं। आजादी के बाद से ही योजनानुसार घुसपैठ का सिलसिला शुरू हो गया था। वोट बैंक की राजनीति ने इसे और अधिक प्रोत्साहित किया। आज भारत में करोड़ों बंगलादेशी हैं। उनके पास पहचान पत्र के साथ साथ राशनकार्ड भी है। हम दोष केवल सरकार को देते हैं। मूल रूप से सरकार और भारत की राजनीति जिम्मेदार है लेकिन नौकरशाही का कदाचार भी इसके लिये जिम्मेदार है। साथ ही हिन्दू समाज का उदासीन रवैया भी स्थिति को विकट बना रहा है। यह समस्या केवल उन क्षेत्रों की नहीं है, जहाँ बंगलादेशी हैं अपितु इसे राष्ट्रीय समस्या के रूप में देखा जाना चाहिए। प्रत्येक भारतीय का देश की सुरक्षा और आवाज उठाये। यदि तो अपने दायित्वों के करता है। आक्रमण के कारण स्वरूप परिवर्तित हो

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

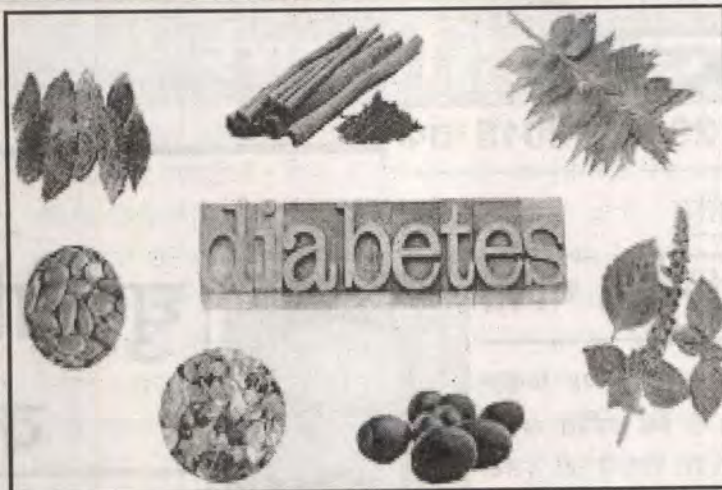
यह कर्तव्य है कि, वह अस्मिता के लिये वह ऐसा नहीं करता पालन में कोताही बंगलादेशी जन भारत का जनसंख्या गया है। नवम्बर 92

में जमाते इस्लामी की पत्रिका में एक लेख प्रकाशित हुआ था, जिसके अनुसार भारत के नौ जिले मुस्लिम बहुल थे। 2012 तक आते आते यह संख्या सौ को पार कर गई है। आबादी का यह फैलाव भारतीय मुसलमानों के कारण से इतना नहीं है। अधिकांश मुसलमान परिवार नियोजन का समर्थन नहीं करते लेकिन शिक्षित वर्ग में परिवार नियोजन अपनाया जा रहा है, इस सच्चाई को भी स्वीकार करना होगा। आबादी का असंतुलन बंगलादेशियों के कारण है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट जो 1992 में प्रकाशित हुई थी, के अनुसार भारत में 5 से 6 करोड़ बंगलादेशी हैं। सन् 1901 में असम की जनसंख्या मात्र 33 लाख थी लेकिन 1971 की जनगणना में एक करोड़ पचास लाख से अधिक हो गयी। यह वृद्धि देश की वृद्धि दर से कई गुना अधिक थी। इसके बाद से ही असम के मूल निवासियों में आक्रोश फैल गया था। पत्रकार अरुण शौरी के एक अध्ययन के अनुसार अकेले बंगाल में ही 56 निर्वाचन क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ बंगलादेशी चुनाव तय करते हैं। असल में, हिन्दू समाज अपनी स्वाधीनता और सम्मान के प्रति गम्भीर नहीं है। किसी भी देश में एक व्यक्ति गलत तरीके से नहीं जा सकता। लेकिन भारत में प्रति दिन दो हजार बंगलादेशी अनुप्रवेश करते हैं। कमी अनेक स्तरों पर है। राजनेता भले ही चाहें कि अनुप्रवेश जारी रहे, लेकिन यदि हिन्दू समाज और व्यवस्था यह सोच ले कि अनुप्रवेश को रोकना है तो वह रुक सकता है। हम अनेक प्रश्नों पर आन्दोलन करते हैं। लेकिन मुस्लिम अनुप्रवेश भी तो एक आबादी का आक्रमण है। विदेशी अनुप्रवेश के विरोध में असम में प्रभावशाली आंदोलन भी हुआ, लेकिन अमेरिका के अनुदान के चलने वाले चर्चों ने इस आन्दोलन को भ्रमित कर समाप्त करा दिया। अमेरिका नहीं चाहता था कि भारत का हिन्दू समाज सशक्त हों। आरम्भ में मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा के जनजातीय संगठन भी अनुप्रवेश को लेकर चले आन्दोलन में साथ रहे। बाद में ईसाई मत प्रचारकों के दबाव में वे पीछे हट गये। ईसाई संगठन चाहते थे कि असम का वनवासी हिन्दू निर्धन बनें रहे। ताकि मतांतरण में परेशानी न हो। बंगलादेशियों के द्वारा वन भूमि पर अधिकार कर लिया गया था, जिस कारण मूल निवासी भूमि से वंचित हो गये। चर्च के लिये यह स्थिति सबसे अच्छी स्थिति थी। आज हालात यह हो गये हैं कि बंगलादेशियों के विरुद्ध चलने वाला आन्दोलन हिन्दी भाषियों के विरुद्ध हो गया है। उल्फा और बोडो आन्दोलन चर्च द्वारा पोषित है। त्रिपुरा के विरोधी नेता श्री विजय हारखोल ने एक बार कहा था कि असम में बंगलादेशी अनुप्रवेश के खिलाफ चले आन्दोलन का समर्थन न करने का आदेश ईसाई संगठनों के द्वारा दिया गया था। हिन्दू समाज यह अनुभव करे कि प्रत्येक वर्ग के लोग अपनी गलत बात को सही सिद्ध करने पर लगे हैं, हमारी मांग तो सत्य पर आधारित है, फिर क्यों नहीं इस बात को उठाया जाता कि बंगलादेशी अनुप्रवेशकों को भारत से बाहर भेजा जाये। सरकार तब ही ध्यान देगी जब हिन्दू शक्ति अपना संगठन बल और ध्येय बल का प्रदर्शन करेगा।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

कलयुग के इस वर्तमान काल में जीवन की भागदौड़ इतनी अधिक है कि एक व्यक्ति को दूसरे से दो मीठे बोल बोलने की फुर्सत नहीं और भावनाएँ समझना तो दूर की बात है। अब तो मीठा और भावनाएँ क्रमशः मधुमेह और हृदय रोग ही समझे जाते हैं। सामान्य तौर पर ग्रामीण परिवेश में भी इस प्रकार के मरीजों की संख्या बहुतायत में है। हृदय रोगों के लक्षण विभिन्न स्वरूप में देखने

को समझना बहुत ही कठिन हो जाता है। उच्च रक्तचाप और घबराहट अधिकतर मामलों में प्रारंभिक लक्षण के रूप में इंगित करते हैं। लेकिन एक विशेष कारण जो मैं अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि लोगों का आँवला रूपी अम्ल रस से दूर होना भी हृदय रोग का एक मुख्य कारण है। क्योंकि आचार्य वाग्भट्ट ने अम्ल रस को हृदय को मजबूत करने रूपी माना है। इन्हीं सब



में अर्जुन तो सर्वसामान्य में प्रचलित औषधि है और भी लाभदायक चिकित्सा वैद्य की सलाह से ली जा सकती है।

लेने व ना लेने योग्य

मधुमेह : शर्करारहित भोजन, समयानुसार भोजन, उचित निद्रा, अतिशय टेंशन ना लेना, रूखे भोजन की अधिकता करना।

हृदय रोगी : अचार उचित मात्रा में लेना। आँवले का सेवन अधिक करना, तेल, चिकनाई, तेज मसालों व नमक का कम सेवन, फलों का सेवन करें। पानी खूब पिएँ।

हृदय रोग : शोधन चिकित्सा के रूप में हृदय बस्ति और विरेचन उपयोगी होते हैं और औषधिरूप

डायबिटीज, हृदय रोग और आयुर्वेद

डॉ. सुनील तिवारी

को मिलते हैं जैसे—सीने में दर्द, उच्च रक्तचाप, घबराहट, पैरों में सूजन इत्यादि।

मधुमेह क्या?

हम अपने दैनिक जीवन में जो अन्न ग्रहण करते हैं उस अन्न से शर्करा का निर्माण होता है जिससे शरीर को ऊर्जा मिलती है। उसमें से अतिरिक्त शर्करा का रूपान्तरण ग्लाइकोजन में होता है। इस ग्लाइकोजन को शरीर में खपाने हेतु पैंक्रियाज द्वारा इन्सुलिन नामक सम्प्रेरक स्राव होता है। लेकिन जब इन्सुलिन की मात्रा कम पड़ने लगती है तो उसे व्यक्ति को मधुमेह हो जाती है और इसकी निदान किया जाता है या इन्सुलिन का शोषण मांसपेशियों में कम होने के कारण भी मधुमेह रोग होता है। लेकिन कुछ आदतें जैसे—अति मधुर भोजन, अति निद्रा, बिना भूख के भोजन या आनुवंशिक कारण भी मधुमेह बनाने में भूमिका निभाते हैं।

हृदय रोग क्या?

हृदय शरीर का महत्वपूर्ण अंग होने के साथ-साथ उसके रोगों

के फलस्वरूप आज से बीस साल पहले हृदय रोगों के ऐसे-ऐसे नाम जो व्यक्तियों ने कभी सुने नहीं थे आजकल सामान्य हो गए हैं।

डायबिटीज और हृदय रोग में सामान्य अनुभव में आने वाले लक्षण

मधुमेह : अतिशय थकान आना, शीघ्र थकना, काम के प्रति उत्साह न होना, भूख भरपूर लगना पर तत्प्रमाण में आहार लेने पर भी थकान लगना, अति बहुमूत्रता, अति प्यास, वजन घटना यह लक्षण व्यापक रूप से दिखते हैं। उपरोक्त लक्षणों में से कुछ लक्षण अन्य रोगों में भी दिखते हैं अतः मधुमेह होने का भ्रम तुरंत एवं जल्दबाजी में न करें। उसके लिए आयुर्वेदिक प्रेक्टिशनर से मिलकर पूर्णतः निदान करवाएँ। आजकल फास्टिंग और भोजन के दो घंटे बाद शुगर टेस्ट करवाकर भी रोग का निदान किया जा सकता है या फिर यों कहें कि शुगर टेस्ट करवाना भी सबसे उचित रहता है।

हृदय रोग : घबराहट, चक्कर आना, सीने में दर्द होना, बिना

अम्लपित्त, ये सामान्य लक्षण भी हृदय रोग की तरफ इंगित करते हैं। बिना देर लगाये बी.पी. चैक करवाएँ। अगर एक हफ्ते तक लगातार बढ़ा हुआ आने पर आगे की जाँचें करवाना बहुत जरूरी हो जाता है। जैसे—TMT, ECO, ECG इत्यादि—इत्यादि जिनसे रोग का निदान जल्दी होकर चिकित्सा भी जल्द की जा सकती है।

चिकित्सा

पूरे विश्व में सौ से अधिक चिकित्सा पद्धतियाँ मनुष्य को निरोगी रखने में प्रयत्नशील हैं। दिन-प्रतिदिन नई-नई औषधियों की खोज अनवरत जारी है। लेकिन इस समय में आयुर्वेद इन रोगों में ज्यादा फलदायक साबित हो रहा है।

डायबिटीज — आयुर्वेद में शोधन और शमन ऐसी दो प्रकार की चिकित्सा है। शोधन का मतलब है वातादि दोषों को शरीर से बाहर निकाल फेंकना और शमन शोधन करने के पश्चात् अल्प मात्रा में औषधि से व्याधि नियंत्रण में आ जाती है। आयुर्वेद में मधुमेह को संतर्पणोत्थान व्याधि यानि अति विश्राम, अति भोजन के कारण व्याधि माना गया है। शोधन में वमन कर्म सबसे उचित है जोकि शास्त्रोक्त हर १५ दिन में करने को बोला गया है पर व्यावहारिक दृष्टि से यह संभव न हो पाता इसलिए हर ६ महीने में भी वमन कर्म अच्छे परिणाम सामने लाता है। शमन चिकित्सा में गुड़मार चूर्ण, गुड़ूची, नीम पत्र, बिल्व पत्र, जम्बू बीज, अनंतमूल चूर्ण, कुटकी चूर्ण इत्यादि प्रकृति के अनुसार उपयोग होते हैं। इसी तरह त्रिवंगभस्म, शिलाजीत यह रसायन के रूप में उपयोग होते हैं। अन्य औषधियोग वैद्य की सलाह से लेना हितकर होता है।

जिला बुलन्दशहर से अखिल भारत हिन्दू महासभा

को प्राप्त दान सूची मास अप्रैल 2018

1.	डा० विवेक छाबड़ा (मानचेस्टर, इंग्लैण्ड में कार्यरत डाक्टर) भ्राता, अनुराग छाबड़ा 519, लक्ष्मीनगर, बुलन्दशहर (दो कैलेण्डर देने पर आर्थिक सहयोग)	1100/-
2.	कैलाश पति महेश्वरी, बुलन्दशहर (पूर्वप्रधानाचार्य डी० ए० वी०) (72 वीं वर्षगांठ पर दान)	250/-
3.	के० पी० महेश्वरी, बुलन्दशहर (कैलेण्डर देने पर सहयोग)	100/-
4.	संजीव बन्सल, बुलन्दशहर (कैलेण्डर देने पर सहयोग)	100/-
5.	नरेश कुमार अग्रवाल 136, मुंशी पाड़ा निकट बंसल स्टेशनर्स बुलन्दशहर (बिना कहे, आर्थिक सहयोग करने वाले प्रथम व्यक्ति)	100/-
6.	राहुल महेश्वरी द्वारा माहेश्वरी मारबल्स, पत्थर विक्रेता, चान्दपुर रोड़, बुलन्दशहर (कैलेण्डर देने पर सहयोग)	100/-
7.	गुप्त आर्थिक सहयोग (दो कैलेण्डर देने पर)	1101/-
8.	एच० एस० शर्मा बुलन्दशहर (कैलेण्डर देने पर सहयोग)	100/-
9.	वाई०पी० सोलंकी, बुलन्दशहर (कैलेण्डर देने पर सहयोग)	100/-
10.	ए०के० चंचल, बुलन्दशहर (कैलेण्डर देने पर सहयोग)	100/-
11.	पी०के०, बी०एस०आर० (कैलेण्डर देने पर सहयोग)	100/-
12.	हिमांशु राघव, बुलन्दशहर (कैलेण्डर देने पर सहयोग)	100/-
13.	डा० रामजी, आम्बेडकर की 127 वीं जयन्ती पर गुप्त दान	1/-
14.	डा०वी० सिंह, संरक्षक भारतीय किसान यूनियन, प० उ०प्र०, बुलन्दशहर (दान)	150/-
15.	डा० वीरेन्द्र सिंह, संरक्षक राजपूत सभा, बुलन्दशहर (महाराणा प्रताप जयंती पर दान)	201/-
16.	श्री मती प्रकाश सिंह, बुलन्दशहर (कैलेण्डर देने पर सहयोग)	100/-
17.	के०एस० पेन्ट्स हाऊस 4, मान सरोवर कॉलोनी पन्नी नगर, बुलन्दशहर (डा० रामजी अम्बेडकर की 127 वीं जयंती पर दान)	100/-
18.	रमेश चन्द वैदिक द्वारा वीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनालय 18/186, टीचर्स कॉलोनी बुलन्दशहर-203001 (पुत्री के विवाह पर दान)	150/-
19.	ओ३म् प्रकाश, बैन्ड वाले, बुलन्दशहर (डा० रामजी अम्बेडकर जयंती पर दान)	100/-

टोटल 4153/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

क्यों होती है एसीडिटी?

- ❖ गरमी में उष्णता से शरीर में पित्त अधिक पैदा हो जाता है। पाचन शक्ति कमजोर हो जाने से भोजन को पचाने में ज्यादा समय लगता है।
- ❖ तेज मिर्च-मसालेदार, चटपटे, भारी और जंक फूड का लगातार सेवन करने से।
- ❖ जरूरत से अधिक कैलोरी वाला भोजन लेने से। मांसाहारी आहार, कॉफी, चाय, सिगरेट-बीड़ी और शराब का ज्यादा सेवन करने से।
- ❖ मानसिक तनाव, काम-धंधे की अत्यधिक व्यस्तता तथा चिंता का माहौल। परिवार में बिना किसी बात के गुस्सा करने और उदास रहने से डर भी इस रोग का कारण बनता है।
- ❖ जो लोग दिन भर बैठने का काम करते हैं लेकिन सैर और व्यायाम नहीं करते।
- ❖ घबराहट और जल्दी-जल्दी असमय कुछ न कुछ खाते-पीते रहने से भी व्यक्ति इस बीमारी के घेरे में जल्दी ही आ जाता है।

बचाव : अविपत्तिकर चूर्ण १ चम्मच रोजाना सुबह खाली पेट पानी से लें व शाम को भोजन के १ घंटे पहले पानी से लें।

संवा धर्म समाज की आगम के अनुकूल।

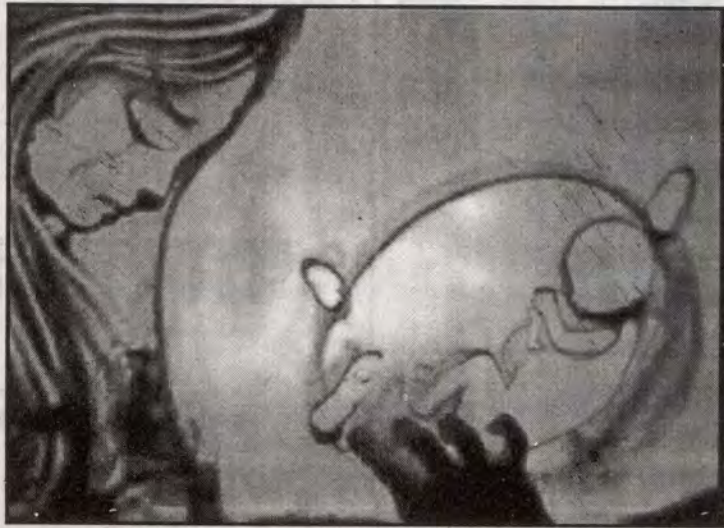
यह पुनीत उद्देश्य है जेन गजट का मूल।।

हिंसा बढ़ रही है। आतंकवाद फैला रहा है। अपहरण की संस्कृति अपनी जड़े जमा रही है। चोरी और लूटमार की घटनाएं थमी नहीं हैं। हत्याओं और आत्महत्याओं का सिलसिला चल रहा है। समाचार-पत्रों में ये संवाद सुर्खियों में प्रकाशित होते हैं। हिंसा से जुड़ी ऐसी घटनाओं की स्थान-स्थान पर भर्त्सना होती है। कोई भी संवेदनशील व्यक्ति इनको उचित नहीं मानता। जिस युग में मानवाधिकार की चर्चा वैश्विक

स्तर पर चलती हो उस युग में असुरक्षा और आतंक का वातावरण बहुत बड़ी चुनौती बनकर खड़ा है। जिस समय मजदूरों को बंधक बनाने और बालाश्रम की प्रवृत्तियों के औचित्य पर प्रश्नचिन्ह खड़े हो रहे हों उस समय बिना ही किसी अपराध के मनुष्य को गोलियों से भून देना किस मनोवृत्ति का परिचायक है?

हर मनुष्य को जीने का अधिकार है मनुष्य ही क्यों प्राणीमात्र जीने का अधिकारी हैं किसी भी प्राणी के प्राणों को बलात लूट लेना हिंसा के दो रूप हैं अपरिहार्य और परिहार्य। एक गृहस्थ को जीवन यापन के लिए जो हिंसा करनी पड़ती

भ्रूण हत्या एक प्रश्न चिन्ह



है उससे बचना संभव नहीं हैं अपरिहार्य या आवश्यक हिंसा को रोका नहीं जा सकता किंतु जिस हिंसा से बचा जा सकता है जिसके बिना जीवन चल सकता है वेसी हिंसा होती है तो लगता है कि मनुष्य क्रूर बन रहा है। ऐसी हिंसा को रोकना आवश्यक है किंतु जिस देश या समाज में अर्थ हिंसा की तरह अनर्थ हिंसा को भी वैद्य मान लिया जाता है कानून के संरक्षण में निश्चित होकर आदमी सरेआम हत्या करता हो उस देश या समाज में संवेदनशीलता कहां रहेगी? सार में मत्स्य न्याय चलता है। बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है। शक्तिशाली पशु दुर्बल पशुओं को मार कर पेट भरते हैं। कुछ पशु आदमखोर भी होते हैं ऐसे पशुओं को समाप्त करने का अभियान चलाया जाता है पर मनुष्य तो पशु दुर्बल पशुओं

को मार कर पेट भरते हैं। कुछ पशु आदमखोर भी होते हैं ऐसे पशुओं को समाप्त करने का अभियान चलाया जाता है पर मनुष्य तो पशु नहीं है। वह अकारण ही किसी जीव की हत्या करे दुर्बल और बेजुबान प्राणियों का प्राण वियोजन करें इसमें उसकी क्या महता है? मनुष्य सवभावतः हत्यारा नहीं है मनुष्य जाति के दो वर्ग हैं पुरुष और स्त्री। स्त्री को करुणा की मूर्ति माना जाता है पर जब उसका नाम हत्या के साथ जुड़ता है तो आश्चर्य होता है। हत्या भी किसकी? पशु पक्षियों की नहीं। आक्रांता मनुष्य की नहीं अपराधी मनुष्य की नहीं। अपने ही खून की हत्या कितनी नृशंसता, कितनी क्रूरता। एक स्त्री इतनी नृशंस और क्रूर क्यों हो जाती है? शोध का विषय है। जिस हत्या की मैं चर्चा कर रहा हूं वह है भ्रूण

हत्या। एक मां अपनी अपनी अपाहिज संतान का पालन-पोषण करती है उस समय वह एक देवी प्रतीत होती है। निःस्वार्थ भाव से अपनी सुख-सुविधाओं को बलिदान करने वाली एक मां अपने शिशु को मारने की स्वीकृति कैसे दे देती है? इस विषय में कानून क्या कहता है मुझे उसमें नहीं उलझना है। मानवीय अधिकार की दृष्टि से यह अनुचित है। क्या उस शिशु को जीने का अधिकार नहीं है? निरपराध हत्या की दृष्टि से भी गलत है। बेचारे उस शिशु ने किसका क्या अपराध किया? जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए गर्भपात को वैद्य मानना अर्थात् माता-पिता की गलती का प्रायश्चित्त उसकी संतान को देना है। कर्मशास्त्रीय दृष्टि से इसको महापाप माना गया है। भ्रूण हत्या एक जघन्य अपराध है। कोई भी धर्मशास्त्र इसकी अनुमति नहीं दे सकता। यह अपराध नीतिशास्त्र सम्मान भी कैसे हो सकता है? राष्ट्रवाद या स्वार्थवाद के नाम पर जो नीति प्रवर्तित होती है उसकी बात अलग है क्योंकि वहां नीति पर स्वार्थ हावी हो जाता है। भ्रूण परीक्षण की पद्धति अमानवीय बनती जा रही है। क्रोमोसोम की विकृति और वंशानुगत बीमारी की जांच के लिए परीक्षण की तकनीक विकसित हुई किंतु उसका उपयोग गर्भस्थ शिशु कन्या हुई तो उसके अस्तित्व पर ही संकट आ जाता है। वैज्ञानिक युग में भी लड़के और लड़की को लेकर रुढ़ और भ्रांत धारणाओं को नहीं तोड़ा गया तो फिर ये कब टूटेगी? लड़का अपना भाग्य साथ लेकर आता है तो क्या लड़की अपना भाग्य बेचकर आती है। महावीर, बुद्ध और गांधी के देश में हिंसा का यह नया रूप भारतीय संस्कृति का उपहास है। कुछ प्रांतों में गर्भ परीक्षण पर प्रतिबंध लगा है किंतु जब तक मनुष्य की मनोवृत्ति नहीं बदलेगी वह नए रास्ते खोजता रहेगा।

जिला बुलन्दशहर से हिन्दू सभा वार्ता को प्राप्त शुल्क मास अप्रैल 2018

1.	आदर्श कृष्ण कॉलेज ऑफ एजुकेशन मैनपुरी - 205001 (उ०प्र०) (आजीवन)	1200/-
2.	अमित महेश्वरी पुत्र कैलाश पति महेश्वरी, सेठों वाली गली, डिप्टी गंज, बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2018-19)	150/-
3.	नव भारत पेन्ट्स, सेठों वाली गली डिप्टीगंज बुलन्दशहर (दो वर्षीय शुल्क 2018-19 तथा 2018-19)	300/-
4.	प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय 10/565, आदर्श नगर, बाई पास रोड, बुलन्दशहर, (वार्षिक)	150/-
5.	एडवान्स कॉलेज आफ मैनेजमेन्ट एण्ड टेक्नोलॉजी, रेलवे रोड, डी० ए० वी० इन्टर कॉलेज के सामने बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2018-19)	150/-
6.	रमेश प्रसून 4/75, सिविल लाइन्स, टेलीफोन केन्द्र के पीछे मोती बाग, बुलन्दशहर, (कांग्रेसी होते हुए स्वेच्छा से वार्षिक ग्राहक बने हैं)	150/-
7.	हरी शंकर शर्मा (मंत्री विश्व हिन्दू परिषद्) 274/4, शेख सराय, बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2018-19)	150/-
8.	यश पाल सोलंकी 15/896, आदर्श नगर स्टेशन वाली गली, बुलन्दशहर (वार्षिक)	150/-
9.	अनिल कुमार चंचल 71, बी, रामा एन्क्लेव, विराट फार्म हाऊस के पीछे भूड, बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2018-19)	150/-
10.	पवन कुमार, वरिष्ठ सहायक, कार्यालय जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2018-19)	150/-
11.	राघव डेन्टल क्लिनिक 61, रेलवे रोड, स्टेट बैंक के सामने, बुलन्दशहर (वार्षिक)	150/-
12.	राष्ट्रीय कोहिनूर (साप्ताहिक) काली मंदिर रोड महाराणा प्रताप नगर, एटा-207001 (नवीनीकरण शुल्क 2018-19)	150/-
13.	डा० वीरेन्द्र सिंह, पूर्व प्राचार्य 7, मान सरोवर कॉलोनी, पन्नी नगर बुलन्दशहर (उ०प्र०) (वार्षिक)	150/-
14.	प्रकाश बैण्ड, निकट अम्बर सिनेमा, मुंशी पाड़ा (मालवीय मार्ग), बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2018-19)	150/-

टोटल 3300/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

दान/सहयोग सहायता द्वारा इन्द्रदेव, बुलन्दशहर माह फाल्गुन-चैत्र विक्रमी सम्वत् 2074-75 (फरवरी-मार्च 2018)

1.	दि मॉरल साप्ताहिक, कानपुर	500/-
2.	दो गरीब बच्चों की फीस जमा की	2380/-
3.	एक निकट सम्बन्धी को सहायतार्थ दिए	2000/-
4.	होली मिलन समारोह	200/-
5.	वैदिक संसार (मासिक) इन्दौर	501/-
6.	हिन्दू सभा वार्ता एवं हिन्दू महासभा चैत्र कृष्ण प्रतिपदा (2-3-2018) विक्रमी सम्वत् 2074 एवं चैत्र मास प्रतिपदा(22-3-2018) शक सम्वत् 1940	1901/-
7.	साप्ताहिक दि मॉरल, कानपुर	500/-
8.	नगर आर्य समाज, बुलन्दशहर	143/-
9.	अखिल भारत हिन्दू महासभा, बुलन्दशहर	1350/-
	टोटल	9475/-

इन्द्रदेव गुलाटी, संस्थापक, सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर



(पिछले अंक का शेष)

आज से आठ वर्ष पहले १४ फरवरी २००५ के अपने अंक में प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका टाइम नेमुख-पृष्ठ पर डाक्टर खान के चित्र के साथ ११-पृष्ठों में सचित्र आवरण कथा प्रकाशित की थी जिसमें उन्हें दुनियाँ का सबसे बड़ा आणविक तस्कर कहा गया था। उस अंक में भविष्यवाणी की गई थी कि यदि वहाँ की सेना में आतंकवादियों की घुसपैठ हो गई तब उनके परमाणु हथियार उनके हाथ लग सकते हैं। ऐसा होने के वचा परिणाम होंगे, उस विभीषिका पर अनेक देश चिन्तित हैं और शायद इसीलिए अमेरिका पाक-सरकार के अनेक नखरे सहन करता रहा है।

आज यह सर्वविदित है कि बीते हुए वर्षों में दो बार, पहले जनवरी २००२ में और दुबारा जून २००२ में भारत और पाकिस्तान युद्ध की कगार पर आ खड़े हुए थे और अणु-युद्ध की विभीषिका इस उपमहाद्वीप पर मँडरा रही थी। यद्यपि अटल बिहारी बाजपेयी ने स्वयं कश्मीर जाकर पाकिस्तान के प्रति मित्रता का हाथ बढ़ाया

था पर हाल में उजागर हुए यह तथ्य कि उसके पास ४८ अणु आयुद्ध मावीर युद्ध के लिए सन्नद्ध हैं और उसके पास जो विखंड्य-फिसाइल-सामग्री है उससे ५२ अणुबम और नाये जा सकते हैं, गम्भीर चिन्ता का विषय बन सकते हैं।

आज इस बात के पर्याप्त साक्ष्य मौजूद है कि पाकिस्तान ने उत्तरीकोरिया को आणविक टेक्नोलाजी दी है पर अमेरिका न तो इस्लामाबाद को इसके लिए कोई चेतावनी दी है न ही उत्तरी कोरिया को दी जाने वाली पाकिस्तानी सहायता पर कोई प्रभावी रोक लगाई है। दूसरी गम्भीर बात यह है कि पाकिस्तान ने सऊदी अरब जैसे देश को अणु आयुधों के निर्माण में सहयोग देना शुरू किया था।

यह आश्चर्य का विषय रहा है कि उत्तरी कोरिया के आणविक कार्यक्रम में सक्रिय सहयोग देने के बाद भी बुरा प्रशासन ने मार्च २००३ में निर्णय लिया था कि पाकिस्तान के विरुद्ध किसी तरह के प्रतिबंध न लगाए जाएं। पाकिस्तान को अरबों डालर देकर

पुरस्कृत करना, उसके पुराने ऋणों को माफ करना और उसके आणविक हथियारों के जरवीरों को नजरन्दाज करना यह उसी अमेरिका ने किया है जो अपननी सिद्धान्तवादी विदेशनीति का ढिंढोरा पीटता रहा है। साफ है पाकिस्तान ने अल-कायदा के विरुद्ध अभियान में अमेरिका को

भारत के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय ब्लैकमेल का ऐसा उदाहरण था कि अमेरिका जैसी विश्वशक्ति भी आणविक अनुशासन तो क्या विक्षिप्त पाकिस्तानी धमकियों की के विरुद्ध कुछ भी कहने में असफल रहा था।

सेलिंग हेरिसन के अनुसार एक ओर अमेरिका अलकायदा

एक विश्लेषक यांत्रित उडरो ने हाल में कहा है कि सदी अरब पाकिस्तान के चीन से अणु आयुधों की खरीदारी के लिए भी पाकिस्तान को धन दे रहा है। यह भी आशंका जताई गई है कि पाकिस्तान के माध्यम से स्वयं सउदी अरब भी अणु-आयुध इकट्ठा कर रहा है। सउदी सुरक्षा

पाकिस्तान के विघटन की नई बनती फाल्ट लाईन

हरिकृष्ण निगम

सहयोग देने की पूरी कीमत वसूल की थी। जनरल मुशर्रफ स्वयं अपनी निजी राजनीतिक सुरक्षा के लिए लगता है अमेरिकी सद्भावना पर ही पूर्ण निर्भर है।

हाल में वाशिंगटन-स्थित अन्तर्राष्ट्रीय नीति केन्द्र सेन्टर फार इन्टरनेशनल पालिसी के निदेशाक संलिंग एस. हेरिसन ने भी दावे के साथ एक लेखा में कहा था कि पाकिस्तान के पास सुव्यवस्थित प्रेक्ष पास्य प्रणाली के साथ साथ ४८ अणुबय हैं और उसने इतनी विखंड्य-फिसाइल सामग्री एकत्र कर ली है जिससे वह ५२ अणु आयुध और बना सकता है। शायद इसीलिए जनरल मुशर्रफ ने कुछ वर्षों पूर्व भारत पर अणु प्रहार की पहल की धमकिया, दूरमारक प्रक्षेपास्त्रों के मड़काऊ परीक्षण, विश्व जनमत की अवहेलना और राष्ट्रसंघ में अपने राजदूत... अकरम द्वारा आणविक हमले की अनुत्तरदायी चेतावनी दी थी। यह

अंकुश लगाने के लिए पाकिस्तानी सहयोग चाहता है पर दूसरी ओर उसके उत्तरी कोरिया के अणु टेक्नोलाजी साझेदार बनने पर चुप्पी सार्थक पर आश्चर्य भी किश्स जस 1हस है। जपयहसा के रासायनिक व जैविक हथियारों के बहाने से अमेरिका ने इराक पर हमला किया था पर पाकिस्तान जो एक अनुत्तरदायी देश के रूप में विश्व शांति के लिए आधक खतरनाक सिद्ध हो सकता है उसे एक के बाद एक आर्थिक रियायतें दी जा रही थी, इसे हेरिसन अक्षम्य मानते थे।

अमेरिकी गुप्चर एजेन्सी सी.आई.ए. ने फिर यह तथ्य बारबार उजागर किया है कि ईरान के आणविक कार्यक्रम के विकास में डा. खान की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण रही थी क्योंकि उसने आणविक हाथियारों के अत्यधिक परिष्कृत एवं सेवेदनशील उपकरणों के कल-पूर्जे भी शामिल हैं। डा. खान द्वारा नियंत्रित बिचौलियों के नेटवर्क लीबिया और उत्तरीकोरिया को भी आणविक-शीर्ष-वारहेड-टेक्नोलाजी की आपूर्तिकी गई थी। यह सब जनरल मुशर्रफ के सन्ता ग्रहण करने के बाद भी चलता रहा था। पाकिस्तानी सेना और प्रशासन की मदद के बिना यह नहीं हो सकता था।

अमेरिकी चुनावों के बाद अमेरिकी मीडिया में फिर दोहराया जा रहा है कि पाकिस्तान आज भी आतंकवाद का श्रोत बना हुआ है। अमेरिकी सुरक्षा एजेन्सी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह खुलासा किया है कि सउदी अरब ने पाकिस्तान के माध्यम से चीनी आणविक कार्यक्रमों को चलाने के लिए इस्लामाबाद को विशाल धन राशि मुहैया कराई है। डिफेंस इन्टेलीजेन्स के चीनी मामलों के

मंत्री प्रिन्स सुल्तान ने मई १९६६ में ही कहा था कि पाकिस्तानी अणु परीक्षणों के तुरन्त बाद कहुटा यूरेनियम के संबर्धन करने व प्रक्षेपास्त्र निर्माण के कारखाने का दौरा किया था। यह भी स्पष्ट कहा गया है कि सउदी मंत्री पाकिस्तान के गौरी प्रक्षेपास्त्र छोड़ने के समय पाकिस्तान में ही थे। यह सहयोग हाल तक चलता रहा था जिससे सिद्ध होल है कि अमेरिका जानबूझ कर चीनी और सउदी आणविक कार्यक्रमों के बारे में आंखें मूंदे रहा था। चीनी-सउदी गुप्त गठबंधन शायद अरबों व पाकिस्तान की इस्लामी बम की अदम्य महत्वाकांक्षा का प्रतिफल था। कुछ दिनों पूर्व इंग्लैण्ड में एक पाकिस्तानी मोहम्मद नईम नूर खान की गिरफ्तारी के बाद उस षडयंत्र का भी पर्दाफाश हुआ था। जब अमेरिकी चुनावों के दौरान अलगकायदा न्यूयाथि और वाशिमल के बड़े वित्तीय संस्थानों को आतंकवादी हमलो का लक्ष्य बनाना चाहता था। आतंकवाद के हर प्रकरण की गुप्त सीढ़ी पाकिस्तान होकर जाती है, चाहे वह ठिकाना पश्चिमी विश्व हो या एशिया अथवा अमेरिका! विडम्बना यह है कि यह तथ्य बहुधा पश्चिमी मीडिया ही उजागर करता है। दूसरी ओर हमारे देश में, एक के बाद अनेक हिंसक आसदियों को झेलते हुए हम एक अलग राग अलाप रहे हैं-पड़ोसी से दोस्ती का! क्या हमें पूरी तरह से संचेत होकर अपने फरेबी पड़ोसी पर नज़र नहीं रखनी चाहिए? कही ऐसा न हों कि जब हमारी आंतरने खुलें काफी देर हो जाए। चीन द्वारा पाकिस्तान को हाल में चश्मा अणु विद्युत पोरोयोजना के लिए १५० मिलियन डालर की धनराशि के अनुदान के पीछे शादय सिर्फ विकास का प्रतब्ध नहीं है।

श्री मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग



दक्षिण भारत श्रीशैलम ज्योतिर्लिंग आंध्र प्रदेश के पश्चिमी भाग में कुर्नूल जिले के नल्लामल्ला जंगलो के मध्य श्री सैलम पर्वत (जिसको दक्षिण का कैलास माना गया है।) पर बिराजमान है। भगवान शिव एवं वात्सल्यमूर्ति माता पार्वती के दो पुत्र हैं, श्री गणेशजी और श्री कार्तिकेय। शिव परिवार बड़ा ही अद्भुत है। जैसे हम अपने परिवारों में देखते हैं, इन दोनों पुत्रों में एक बार अहंकार जनित स्पर्धा हुई। श्री कार्तिकेय रूठकर दक्षिण में चले गये। माता

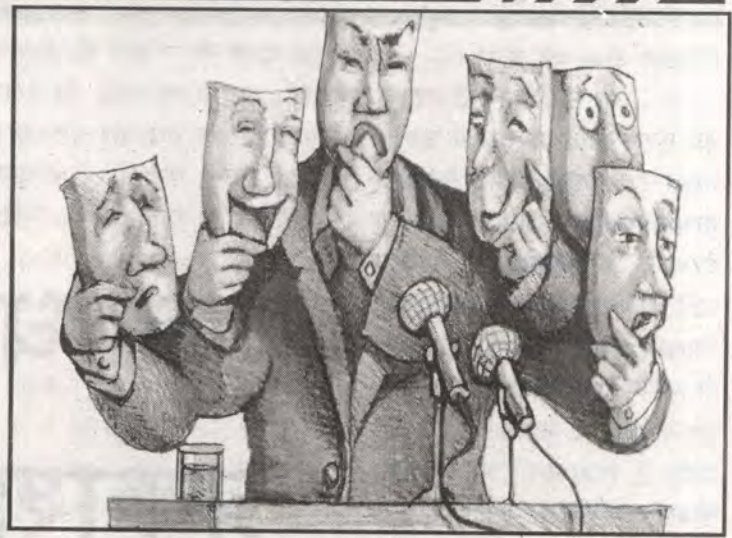
और पिता को अपने दोनों पुत्र अपनी दोनों आंखों के बराबर होते हैं। श्री कार्तिकेय को अपना नित्य सांनिध्य प्रदान करने हेतु भगवान शैल पर्वत पर प्रकट हुए। ऐसी शिवपुराण की परंपरा है। महाभारत की परंपरा के अनुसार पांडु पुत्र अर्जुन ने यहाँ तप किया था। शिव परिवार बड़ा ही रूपकात्मक है। शिव जगत के आदि पिता हैं, तो माता पार्वती आदि शक्ति का स्वरूप हैं। भगवान गणेश धैर्य, विवेक एवं मातृ-पितृ भक्ति का आदर्श हैं। ब्रह्मांड की परिक्रमा करने के लिए कार्तिकेय अपने वाहन मयूर पे बिराजमान होकर आकाश गमन करते हैं। तब मुषक वाहन श्री गणेशजी अपने महान माता-पिता की तीन बार प्रदक्षिणा करके ब्रह्मांड की परिक्रमा की अनुभूमि कर लेते हैं। उनका यह व्यवहारिक ज्ञान एवं विवेक उन्हें सभी देवों में प्रथम पूज्य देव के स्वरूप में प्रस्थापित करता है। श्री कार्तिकेय तो देवों के भी सेनापति हैं जो आंसुरी शक्तियों से पूरे ब्रह्मांड की रक्षा करते हैं। ऐसे दिव्य शिव परिवार के दर्शन से हमारे सभी सामाजिक एवं पारिवारिक विघ्नों का और कष्टों का निवारण करें एवं परिवार में सुख-शांति एवं सौहार्द बनाये रखें।

आज निसंदेह यह कहना अनुचित नहीं होगा कि विश्व में भारत जैसे विराट देश में लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के होते हुए भी ऐसे राजनैतिक कर्मजों का अभाव प्रतीत होता है जो राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोकर विकास के पथ पर अग्रसर कर सकें? कुशल व सक्षम राजनीतिज्ञों के अभाव के कारण अनेक प्रकार के अल्पकालिक राजनैतिक लाभ दीर्घकाल में विनाशकारी बन जाएं तो उसका उत्तरदायी कौन होगा? देश की सर्वोच्च संस्था संसद में चाहे-अनचाहे गतिरोध बनायें रखकर बार-बार और बात-बात पर विधायी कार्यों में अवरोध उत्पन्न करना राजनेताओं की विरोधी व दूषित मानसिकता से ग्रस्त होने का ही परिचय कराती हैं। परिणाम स्वरूप वर्तमान राजनीति समाज में संघर्षों का समाधान करने के स्थान पर अनगिनत संघर्षों को जन्म दे रही हैं। साथ ही ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे राजनेता सत्ता के लिये इतने

अधिक आतुर हैं कि देश को विश्व गुरु बनाने के स्थान पर कूटनीति, रणनीति व राजनीति के क्षेत्र में आगे बढ़ा रहें हैं।

आज देश में विभिन्न राजनेता मुख्यतः लोकतंत्र के उच्च मापदंडों को त्याग कर राष्ट्रहित की उपेक्षा करके आम नागरिकों की भावनाओं का दोहन करने में अधिक सक्रिय हो गये हैं। इससे भ्रमित होकर हम ऐसे राजनीतिज्ञों व देशद्रोही षडयंत्रकारियों के झांसे में आकर अप्रत्यक्ष रूप से अज्ञान वश अपने को ही हानि पहुँचा रहे हैं। हम क्यों नहीं सोचते कि यह समाज, यह नगर, यह प्रदेश और सम्पूर्ण देश हमारा ही तो हैं, फिर हम क्यों ऐसे भ्रम फैलाने वाले सत्ता लोभी नेताओं की असामाजिक व अराष्ट्रीय मानसिकता को नहीं समझते? हम बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक एवं स्वर्ण व दलित के तथाकथित भेद भरे रिसते हुए घावों को भरने के स्थान पर उसे क्यों हरा होने दें? क्या ऐसे नेताओं के रहते

भारतविरोधी शक्तियाँ हमको खंडित करने के लिये अपने-अपने स्तर से और अधिक सक्रिय नहीं हो जायेगी? विचार करना होगा कि हमारे देश के नेताओं की सत्ता लोभी राजनीति का परिणाम कितना भयंकर हो सकता है? क्यों नहीं राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिये राजनीति को पवित्र करके एक ऐसी राष्ट्रनीति अपनायी जाती जिससे सभी वर्गों व पंथों को समान अधिकार मिलें और देश सुदृढ़ हो सकें? क्या हम कभी देश की



राजनैतिक कर्मजों का अभाव

विनोद कुमार सर्वोदय

राजनीति में निरंतर हो रही गिरावट पर चर्चा करके राष्ट्रहित में इसको पावन करने के लिये कोई मार्ग ढूँढ़ने का प्रयास करेंगे? वस्तुतः राजनीति तो राष्ट्रनीति निश्चित करके सम्पूर्ण समाज के हितों के लिये कार्य करते हुए राष्ट्र को विकास के

मार्ग पर ले जाने के लिये प्रतिबद्ध होती हैं। जबकि आज आधुनिक भोगवादी युग की चकाचौंध से आकर्षित होकर उसे पाने की अभिलाषा में विभिन्न राजनैतिक दलों के सामान्य कार्यकर्ताओं में नेता बनने की होड़ लगी हुई है। आज राजनीति को आत्मस्तुति व आनंददायी जीवन शैली व्यतीत करने का माध्यम बनाया जा रहा है। जिस कारण राजसत्ता के प्रति मोह बढ़ने से विभिन्न नेताओं में तीव्र प्रतिद्वंद्विता छिड़ी हुई है। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियाँ होने से देश के उज्ज्वल भविष्य के लिये किसी भी प्रकार के चिंतन व त्याग का पूर्णतः अभाव बना हुआ है। परिणामस्वरूप देशभक्ति या राष्ट्रप्रेम की अनभिज्ञता से अधिकांश युवा पीढ़ी को सरलता से भ्रमित करके उनको असामाजिक, अराष्ट्रीय व देशद्रोही आंदोलनों में झोंकना भी सरल हो गया है। अभी पिछले दिनों (2 अप्रैल 2018) देश के विभिन्न भागों में एससी/एसटी एक्ट (अनुसूचित जाति-जनजाति अत्याचार निरोधक अधिनियम 1989) में सुधार से संबंधित उच्चतम न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध जो उपद्रव हुए वे अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण थे। यह कोई आंदोलन नहीं बल्कि षडयंत्रकारियों द्वारा सुनियोजित अराजकता का निंदनीय प्रदर्शन था। अतः भविष्य में ऐसी स्थिति पुनः न उभरे और सभी षडयंत्रकारियों की भारत विरोधी योजनाएँ विफल हो, इसके लिये हम सबकी यह प्राथमिकता होनी चाहिये कि राष्ट्रहित में हर संभव प्रयास करके राष्ट्र की एकता व अखंडता पर कोई संकट न आने दें। संभवतः ऐसे प्रयासों

से हम देश के विभिन्न राजनैतिक दलों को भी राष्ट्रहित की राजनीति करने के लिये प्रेरित कर सकेंगे। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह विचार करना भी आवश्यक है कि जब तक अल्पसंख्यकवाद व तथाकथित दलितों को विशेषाधिकार देने के लिये राजकोष और सरकारी सुविधायें लुटायी जाती रहेगी तब तक सबका साथ व सबका विकास कैसे संभव हो सकेगा? भारतीय संविधान में तथाकथित दलित हिंदुओं को आरक्षण देने की सीमित अवधि के लिये व्यवस्था की गयी थी परंतु यह आरक्षण अभी भी यथावत जारी है। इसके अतिरिक्त एससी/एसटी एक्ट के द्वारा उनको एक ऐसा वैधानिक विशेषाधिकार देना कि वे अन्य वर्ग के निर्दोषित होने पर भी उनको झूठा आरोपित करने का अनुचित व अमानवीय कार्य करके सरलता से उनको प्रताड़ित कर सकें, कहाँ तक उचित है? धार्मिक आधार पर देशवासियों को बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक में वर्गीकरण करके केवल एक वर्ग को अतिरिक्त अधिकार देना क्या साम्प्रदायिक सौहार्द व धर्मनिरपेक्षता पर आघात नहीं है? हमारे नीतिनियन्ता ऐसी धार्मिक व जातीय राजनीति के चलते सम्पूर्ण समाज को समग्र दृष्टि से न देख कर वर्तमान के लिये भविष्य को भी संकट में क्यों डाल रहे हैं? क्या इन परिस्थितियों में सबका साथ संभव हो सकता है? सम्पूर्ण समाज में परस्पर भेदभाव व वैमनस्य बढ़ाने वाली और वर्ग विशेष को लुभाने वाली नीतियाँ क्या राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में कोई सकारात्मक संदेश का संचार कर पायेगी? **शेष पृष्ठ 11 पर**

न्याय-प्रक्रियागत विलम्ब और बहस में व्यहहत दुर्बोध भाषा

भारत में न्याय-प्रक्रिया की दृष्टि से दो बातों की ओर प्रबुद्ध जन सुदीर्घ काल से जनमानस का ध्यान आकृष्ट कर रहे थे। इनमें से प्रथम है मुकदमों के निस्तारण में लगनेवाला सुदीर्घ समय। छोटे-छोटे मुकदमों के भी निस्तारण में भी कभी-कभी कई-कई साल लग जाते हैं, क्योंकि कभी कुछ अधिवक्ता बन्धु अधिक समय की माँग करते हैं और कभी कार्य-विराम या हड़ताल इत्यादि भी प्रकरण के त्वरित निर्णय में बाधक सिद्ध होते हैं। दूसरी समस्या है अदालतों में अब भी अंग्रेजी का प्रचुर प्रयोग। उच्च और सर्वोच्च न्यायालयों में तो अंग्रेजी का पूर्ण प्रभुत्व है। स्व. डॉ. लोहिया-सदृश अनेक विशिष्ट विचारक और राजनेता इस बात के कारण चिन्ता प्रकट कर चुके हैं कि अदालतों में वकील जिस अंग्रेजी भाषा में बहस करते हैं, उसे उनका मुवक्किल प्रायः नहीं समझ पाता। उसे पता की नहीं चलता कि उससे फीस लेकर वकील साहब उसके पक्ष में बहस कर रहे हैं। या विपक्ष में यह निश्चित ही एक बेहद चिन्तनीय स्थिति है। यह अभिनन्दनीय है कि महामहिम वर्तमान राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी ने, जो स्वयं एक विशिष्ट अधिवक्ता रह चुके हैं, इन दोनों विसंगतियों की ओर राष्ट्र का ध्यान आकृष्ट किया है। उनका कथन है कि समझ में आनेवाली भाषा में दिये जायें फैसले, राष्ट्रपति उन्होंने हाईकोर्ट के फैसलों को ऐसी भाषा में दिये जाने की जरूरत पर बल दिया है, जिसे वादी-प्रतिवादी भी जानते और समझते हों। इसके लिए उन्होंने ऐसा तन्त्र बनाने का सुझाव दिया, जिसमें फैसलों की प्रमाणित प्रतियाँ जारी की जा सकें।

केरल हाईकोर्ट के हीरक जयन्ती समारोह को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा, 'हाईकोर्ट अपने फैसले अंग्रेजी में देते हैं, लेकिन हमारे देश में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। सभी वादी अंग्रेजी के जानकार नहीं हो सकते जिसकी वजह से वे फैसलों के अहम बिन्दुओं को नहीं समझ पाते। अतएव उन्हें फैसले का अनुवाद कराने के लिए वकील या अन्य व्यक्तियों पर निर्भर होना पड़ता है। इससे उनका समय व खर्च और बढ़ जाता है। उन्होंने सुझाव दिया कि ऐसा तन्त्र बनाया जायें जिसमें हाईकोर्ट द्वारा फैसलों की स्थानीय या क्षेत्रीय भाषाओं में प्रमाणित प्रतियाँ उपलब्ध करायी जायें। इन्हें फैसला सुनाये जाने के 24 से 36 घंटों के बाद उपलब्ध कराया जा सकता है। राष्ट्रपति ने कहा कि केरल हाईकोर्ट के मामले में यह भाषा मलयालम और पटना हाईकोर्ट के मामले में हिन्दी हो सकती है। साथ ही उन्होंने कहा कि वह इस सम्बन्ध में सिर्फ उदाहरण दे रहे हैं, लेकिन यह न्यायपालिका और कानूनी वर्ग को चर्चा करके तय करना है। राष्ट्रपति ने मामलों के तजी से निपटारे पर भी जोर दिया; क्योंकि समाज के निर्धनतम और सर्वाधिक वंचित वर्ग के लोग न्याय में देरी से सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। उन्होंने कहा, देश में न्याय में देरी बेहद चिन्ता का विषय है, अतः हमें मामलों के त्वरित निपटारे के लिए एक तन्त्र विकसित करना चाहिए। हमें अदालत की कार्यवाही आपातकालीन परिस्थितियों में अपवाद स्वरूप ही स्थगित करनी चाहिए, न कि कार्यवाही को लम्बा खींचने के लिए बार-बार मामले को स्थगित किया जाये। हमें इस दिशा में आगे का रास्ता तलाशना चाहिए। कार्यक्रम में मौजूद प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा ने कहा कि मामलों को निपटाने में देरी से न्यायिक प्रक्रिया पर से नागरिकों का विश्वास खत्म होता जाता है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्टों की विभिन्न समितियों ने लम्बित मामलों पर ध्यान आकर्षित कराया है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, 'इस दिशा में हमने सफलता हासिल की है।' विधि मंत्री रविशंकर प्रसाद ने न्यायपालिका का आह्वान किया 90 साल या अधिक समय में ऐसे सभी मामलों को तय कीजिए, फैसले लीजिए और निपट दीजिए।

साभार राष्ट्रधर्म

(पिछले अंक का शेष)

“अंत में वह समस्त कहानी को एक रूपक के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि मैंने इस कथा का अर्थ पंडितों से पूछा, तो वे बोले कि हमारी बुद्धि में कुछ नहीं आ रहा’ अर्थात् महापंडित जायसी और शेष सभी मूर्ख। फिर ये महापुरुष अपना लिखा आप ही बाँचते हुए कहते हैं ‘चित्तौड़ शरीर है, राजा मन है जो विचलित होकर कभी विरक्त जोगी, तो कभी अनुरक्त भोगी बनने में गिरगिट को भी लजा देता है। सिंहलद्वीप हृदय और पद्मिनी बुद्धि। वह बुद्धि भी ऐसी बुद्धिहीन है कि वह हृदय का परित्याग कर मन में रमने के लिए व्यग्र है। सुआ (तोता) गुरु है जो नख-शिख वर्णन के मंत्र रस ले- लेकर चेला-चेली को भाग-भग कर पड़ाता फिरता है। कह दो, गुरुजनों से कि यदि तुम्हें वास्तव में गुरु बनना है तो गुरुकुल के कारगाररूपी पिंजरे से निकल कर किसी चित्तौड़ से किसी सिंहलद्वीप तक दूतों की भाँति निरन्तर फिरते फिरो। नागमती संसार है जिससे कोई नहीं बचा। मन-बुद्धि -हृदय सब उसे समर्पित हैं, उसके शरणागत हैं। वह उन्हें दुत्कारने और पुचकारने में सर्वसमर्थ है। राघव चेतन शैतान है जिसे हमारे देवर्षि नारद के रूप में दर्शाया गया है और अलाउद्दीन माया है जो सब प्रकार से छल-बल-कौशल में निपुण है। अजेय है। तुर्की और अरबी की भाँति हिन्दी भी तभी अन्य है, जब वे जायसी द्वारा आविष्कृत प्रेम की भाषा की परिभाषा करती हुई, उसके पथ की पथिक बने और इसी प्रकार के महान् लोग उसकी सराहना के रूप में भटैती करें। जायसी ने यह कहानी जोड़-जाड़ कर घड़-घड़ा कर सुना दी। जो इसको श्रद्धासहित सुनता है, वह पीर हो जाता है। संभवतः इसी से पीरों की व्युत्पत्ति हुई हो।”

“महान् कृपा है प्रभु की जो यह कहानी जायसी महाराज उस समय लिख रहे हैं जबकि वे वृद्धावस्था के कारण क्षीण हो गए हैं। आँखों से ज्योतिहीन, कानों से बहरे, बिना दाँतों के पोपले और धसे कपोलोंवाले तथा भौरों जैसे काले-काले केश गँवाकर सेमल की रुई जैसे केशों से सुशोभित हो गए हैं। यौवन का मद ढल जाने के कारण उसी प्रकार विनम्र हो गए हैं जैसे घर में अन्न का

एक दाना भी न होने के कारण कोई अमावस्या को निर्जला एकादशी का व्रत कर रहा हो। किन्तु इतने पर भी एक बात वस्तुतः सत्य कही है कि ‘बुद्धि

कम नहीं हो किन्तु अतृप्त वासना कैसे नाच नचाती है, उसका प्रत्यक्ष उदाहरण पद्मावत है। जायसी बचपन में ही माता-पिता से विरहित हो गए। दोनों की मृत्यु

के दरबारी इनका रूप-रंग, बलखाती चाल देखकर ठठा पड़े तो ये तुरंत बोले, ‘मोहि हँसै की कोहरें’ अर्थात् मुझ पर हँस रहे हो कि मेरे निर्माता पर? बस सबको

भी बड़ी बात तो उसके मकबरे की है जो बिहार प्रदेश के सहसराम में बन हुआ है। जलकर मरा वह कालिंजर में दफन होने आ गया सहसराम में। हो गया सहस्त्रराम का सहसराम और मंदिर का मकबरा। यही गाथा है दिल्ली के हुमायूँ के मकबरे की। और इन दो की क्या अनेकों ऐसे हैं जिन पर मुर्दे भी कब्जा किए पड़े हैं। अब आगरे के तेजो महालय पर काक दृष्टि लगी हुई है। देखो, कब तक बिचारा बचा रहता है, समझे?”

“समझ गए, सारी समझ गए” ठंडी आह भरकर माधववास कुछ क्षण पश्चात् फिर बोले, “इन जायसी की मृत्यु के विषय में कोई कह रहे थे कि एक सिद्ध पुरुष थे। अनेक रूप धारण करने और अनेक बोली बोलने में समर्थ थे। एक दिन ये सिंह के रूप में थे तो किसी ने बाण मार कर, इन्हें मार डाला। यह कथा क्या है?”

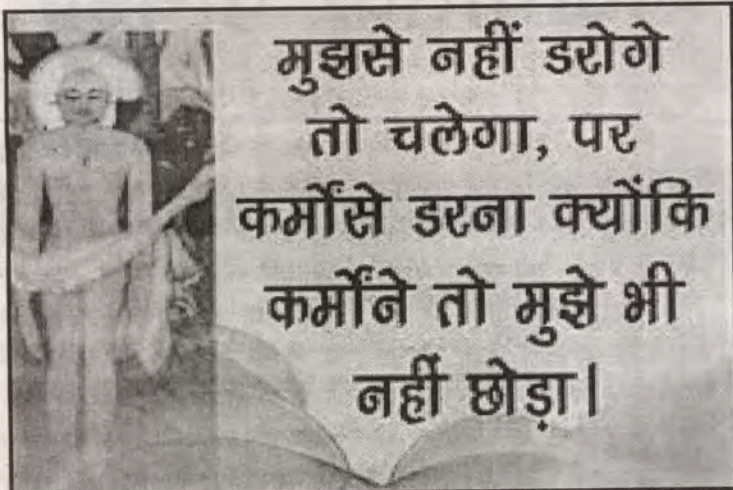
“यह कथा -जायसी नामक व्यथा के अंत की कथा है। इसमें एक अंतर्कथा है। जायस कस्बे से जुड़ा हुआ राज्य अमेठी है। इसके हिन्दू राजा को दिल्ली का भय दिखा-दिखकर जायसी ने डटकर लूटा। लुटते-लुटते वह तंग हो गया। उससे छुटकारा पाने की युक्ति उसके एक सुभट ने सुझाई। राजा ने उसके क्रियान्वयन का भार भी उसे ही सौंप दिया। जायसी नगर के बाहर पीरों की भाँति एक कुटिया बनाकर रहता था। वह बस नाम की ही कुटिया थी। अन्यथा तो उसमें सब प्रकार के साधन थे, जो अमेठी नरेश से जुटाकर उसे संतुष्ट कर रखा था। उसके बाहर शेर की खाल ओढ़े बैठा था। बूढ़े शेर की तरह मिमिया भी रहा था। वह सुभट भी ताक में तो लगा ही हुआ था। उसने उचित अवसर जानकर, उस कागजी शेर पर आखेट के बहाने अपना प्रखर शर कान तक धनुष खींचकर जो मारा सो धरती से लुढ़ककर, मियाँ बिना कहीं रुके सीधे मुल्के अदम तशरीफ ले गए यह है, गीदड़ की मौत मरने वाले उस शेर-शिरोमणि के अंत की कथा।”

टोडरमल सिर हिलाते हुए बोले, “ये तो जायसी और पद्मावत की चर्चा हुई किन्तु अपने कविगण भी तो इनकी देखादेखी नायिका भेद आदि रचने लगे हैं। उनके

शेष पृष्ठ 10 पर

अवधपुरी यह चरित प्रकाशा श्री मानसारंभ

साभार विनय पत्रिका



मुझसे नहीं डरोगे
तो चलेगा, पर
कर्मोंसे डरना क्योंकि
कर्मोंने तो मुझे भी
नहीं छोड़ा।

गई, हृदय बौराई’ अर्थात् बुद्धि नष्ट हो गई, हृदय पगला हो गया अन्यथा ऐसी कहानी कैसे घड़ी जाती?”

“यद्यपि प्रारम्भ में, तथाकथित मंगलाचरण में उनका आचरण बड़े ठसके का है। प्रथम ज्योति के रूप में पैगम्बर मुहम्मद की प्रशंस बहुत सुंदर की है एकमात्र जिनके प्रति अत्यन्त प्रीति के कारण कर्त्तार ने स्वर्ग-अग्नि-पवन-पानी और शरीर शुद्धि के लिए मिट्टी तक की रचना की किन्तु मध्य में आकर सावधान हो गए कि कहीं और अधिक बोला तो मामला बिगड़ जाएगा। अतः श 1 क र - प 1 व 1 ती - लक्ष्मी-हनुमान-अंगद आदि को जैसे-तैसे लाए परन्तु अंत में अंतर की बात बाहर आ ही गई और बोल गए - ‘पातसाहि गढ़ चूरा, चितउर भा इस्लाम’ माया बादशाह बन गई। उसने गढ़ का चूरा कर डाला और चित्तौड़ इस्लाम का पर्याय बन गया।”

गोस्वामी जी को मौन होकर, काष्ठफलक पर पीठ टिकाते देखकर गंग बोले, “पद्मावत का रहस्य तो समझ गए किन्तु जायसी को ऐसी जोड़-तोड़ बिठानी आई कहाँ से?”

होल हँसते हुए बोले, “कल्पना के घोड़ों की कूद-फाँद कराने में यों तो आप भी किसी से

के कारण क्या हैं उन्हें छोड़िए। फिर वे ननिहाल में पले, किस स्थिति में पले, बस पल गए यों ही कहिए। एक आँख चली गई। जन्म से ही काणे थे कि कोई चेचक आदि निकली, वह भी छोड़िए। फिर वे अपने दोष को बड़े गर्व से कहते हैं- ‘एक नैन कवि मुहम्मद गुनी। सोइ बिमोहा जेइ कवि सुनी’ इस एक आँख वाले से जिसने कविता सुनी वही विमोहित हो गया। इसकी टीका हम दरबारी कवियों से अधिक श्रेष्ठ कौन कर सकता है? जब श्रृंगार पढ़ते हैं तो एक आँख अपने आप दबने लगती है। और कहीं दबी-दबाई हो तो फिर कहना ही क्या? अंत में यही समझिए कि पाक-जुम्मा जिनके नाम के कारण है वे ही जायसी के वेष में स्वयं एकाक्ष दैत्याचार्य शुक्र ही हैं ‘भा मोर अवतारु’ इसी का संकेत करता है।”

टोडर ठहाका लगाते हुए बोले पड़े, “कविराज होलराय, वाह-वाह, क्या शब्दों का मर्म प्रकट किया है।”

होल हँसकर, डाँटते हुए, गंभीरता का प्रदर्शन करते हुए से बोले, “टोडर राजा तुम टोकाटाकी करके रस भंग मत करो, सुनते जाओ। अतः एक आँख नहीं और अन्य आधे अंग में भी कई दोष, अधूरा कि और कुछ राम जाने। कमर की बाँकी। पर हाजिर जवाबी में पक्के ऐसे कि एक दिन शेरशाह

पाला मार गया। अब जहाँ तक इनके उस घोर श्रृंगार की बात है जो अश्लीलता की सीमा पार कर गया तो उसमें इनका दोष नहीं। अनाथ, फिर ऐसा रूप, दीन-हीन अवस्था में जायस आकर बसे तो इस स्थिति में कौन इन्हें वरमाला पहनाती -बस-‘लंगड़े की घोड़ी, जितनी नाचे उतनी थोड़ी’? नदीदे की लार, मघा की धारा। कौन जगत में रोकन हार’ संक्षेप में हम तो इतना ही समझे कि-

‘हिंदी देह, अरब की जान, ये पद्मावत की पहचान’

“परन्तु, होल महाराज, हमारी एक शंका का समाधान और करिए” उनके तनिक ठहरते ही माधवदास बोले, “पद्मावत में शेरशाह सूरी की प्रशंसा है और यह शेरशाह वही है जिसने इस अकबर के बाप को मार-मार कर देश से निकल जाने पर बाध्य कर दिया। तो भी अबुलफजल उसी पद्मावत की प्रतियाँ कराकर यत्र-तत्र भिजवा रहा है, इसका भेद क्या है?”

होल हँसते हुए बोले, “इसका भेद इन गंगदेव से पूछो। वे ही कहेंगे तो प्रामाणिक होगा।”

अपनी ओर माधवदास की प्रश्नसूचक आँखों को घूमता देखकर, गंग बोले, “होल भैया! यह भेद भी माधवदास को अब तुम्हीं बता दो।”

होल हँसते हुए बोले, “माधव जी, अपने यहाँ संतगण, अपने प्रवचनों में प्रायः कहते हैं न, कि प्रणवाक्षर में सृजक ब्रह्मा, पालक विष्णु और संहारक शिव तीनों का वास है। तो यही समझ लो कि चाहे ये तुर्क, मुगल, पठान, सूरी, खिलजी, तुगलक, लोदी, सैयद आदि स्वार्थवश एक-दूसरे का गला काट लें, किन्तु जब हिन्दू का गला काटने की बात हो तो सब एक। अरे, तुम केवल शेरशाह की प्रशंसा की बात कर रहे हो, इससे

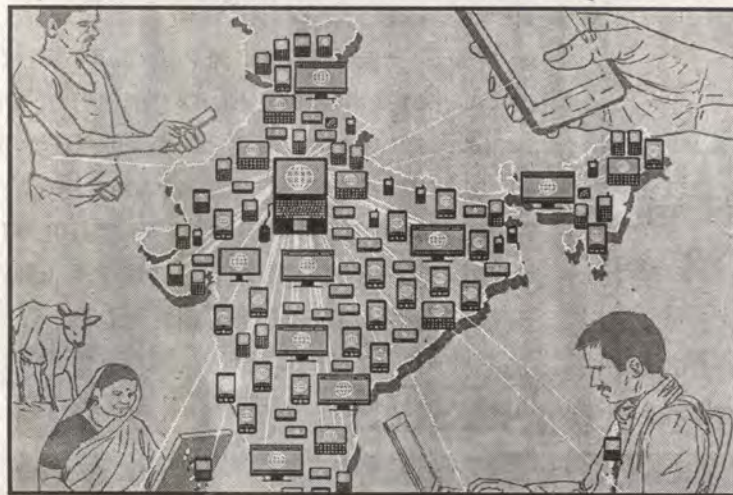
हम सभी जानते हैं कि भारत कई विकसित देशों जैसे अमेरिका, जापान, रूस, चीन, फ्रांस आदि देशों से मजबूत आर्थिक व्यवस्था में पीछे है। ये सभी देश इंटरनेट के माध्यम से नयी-नयी जानकारी को हासिल कर अपना विकास कर रहे हैं और आकाश की बुलंदियों को छू रहे हैं। भारत की भी इस दिशा में पहल हो चुकी है। कुछ ही वर्षों में भारत डिजिटल इंडिया बन जायेगा और यहाँ की अर्थव्यवस्था वैश्विक ताकतों में अपना नाम दर्ज करेगी।

सरकार द्वारा डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर किये गये पहल प्रशंसनीय है। सरकार की यह कोशिश है कि किस तरह देश का कायाकल्प हो। सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती है कि 90 फीसदी आबादी वाले ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल लेन-देन के लिए बुनियादी ढाँचा अपर्याप्त है। भारत में बदलाव का रास्ता निश्चित तौर पर गाँवों के बदलाव से होकर ही गुजरता है। ग्रामीण आबादी को शिक्षित करने के लिए व्यापक पैमाने पर जागरूकता के अभियानों से भारत को डिजिटल अर्थव्यवस्था में वैश्विक ताकत बनते हुए देखा जा सकता है।

सरकार ने इस कमी को पूरा करने के लिए गाँव, शहर, राज्य, देश के सभी नागरिकों को एक सूत्र में बाँधने के लिए डिजिटल साक्षरता मिशन को चलाया और इसके लिए हर संभव प्रयास किये जाने लगे हैं और नयी-नयी योजनाएँ बनने लगी हैं। डिजिटल साक्षरता मिशन को गति देने का लक्ष्य है। इस लक्ष्य को पाने के लिए भारत के ग्रामीणों को डिजिटल साक्षरता देना है ताकि देश का हर नागरिक डिजिटल दुनिया से कनेक्ट हो सके। इंटरनेट के जरिए नागरिकों को सरकारी सुविधाएँ व लाभ सुगमता के साथ जल्द से जल्द मुहैया कराये जा सकते हैं। अन्य विकसित देशों से आगे निकलने के लिए डिजिटल साक्षरता का यह मिशन काफी सराहनीय कदम है। डिजिटल साक्षरता से जो अवगत नहीं हुए उनके लिए इस मिशन के जरिए ग्रामीण भारत में आने वाली सूचना-क्रांति की आँधी का अनुमान लगाना आसान नहीं है।

वित्तमंत्री श्री अरुण जेटली ने डिजिटल साक्षरता को गति

देने की दिशा में कदम बढ़ाते हुए बताया है कि इस वर्ष सशक्त और उन्नत कृषि के लिए ई-पोर्टल लॉन्च करना है। इससे किसानों को खेती के अनुकूल सभी



जानकारी ई-प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध होगी। किसान आसपास के कृषि वैज्ञानिक केन्द्रों से सीधे जुड़ जायेंगे। किसान कृषि वैज्ञानिकों से मौसम मुताबिक खेती के लिए हरसंभव सलाह मशविरा ले पायेंगे। किसानों के लिए ग्लोबल वार्मिंग की सूचना उपलब्ध होगी और ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम की सुविधा से लैस भारतीय किसान उत्पाद के बाजार यानि कृषि मंडियों से सीधा जुड़ जायेगा। मंडियों में प्रतिदिन की कीमत की पूरी जानकारी सदैव उसके पास उपलब्ध होगी। बजटीय प्रावधान से आनेवाले दिनों में उत्पाद संरक्षण के लिए खेतों के आसपास के भंडार गृहों की क्षमता की जानकारी किसानों को मिलने जा रही है। यह राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता मिशन योजना का महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसे ग्रामीण इलाकों की तस्वीर बदलने के लिए चलाया जा रहा है। प्रधानमंत्री ने 1 नवंबर 2016 की रात को जब 500 और 9000 रुपये के नोटों के विमुद्रीकरण की घोषणा की तो देशभर में चारों तरफ हाहाकार मच गया। लोगों के बीच नोटबंदी को लेकर तरह-तरह के तर्क-वितर्क होने लगे। बैंकों और एंटी-एम० में लगी भीड़ को नियंत्रित हनी किया जा सकता था। सरकार ने विमुद्रीकरण के पीछे के उद्देश्य को बताया। कालेधन का पता लगाना और आतंकवाद को मिलने वाली वित्तीय सहायता पर अंकुश लगाना। विमुद्रीकरण के पीछे सरकार का एक और उद्देश्य नगदरहित अर्थव्यवस्था तैयार करना था। नगद रहित लेन-देन का पता लगाया जा सकता है और उनपर नजर रखी जा सकती है। इससे आतंकी संगठनों तथा

अन्य राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों के लिए दी जा रही रकम का पता लगाने में सरकार को मदद मिलेगी। नगद रहित, अर्थ-व्यवस्था का पारदर्शी संचालन सुनिश्चित करने

में सहायक हो सकता है। नकदी साथ रखने का जोखिम कम होगा और वित्तीय समावेशन का एक अधिक सुनियोजित ढाँचा सामने आयेगा। विकास की प्रक्रिया की दिशा में सरकार खर्च अधिक करेगी क्योंकि पारदर्शिता और राजस्व के प्रवाह में बढ़ोतरी के आसार हैं। मगर भारत जैसे विकासशील अर्थव्यवस्था में नगद रहित समाज की तरफ बढ़ने का दूसरा पहलू यह है कि गरीब लोगों के लिए नगद रहित लेन-देन व्यावहारिक नहीं है। विमुद्रीकरण ने अनौपचारिक समाज तथा बैंक से नहीं जुड़े हुए लोगों को खासतौर पर प्रभावित किया है। समाज के इस हिस्से को नगदरहित व्यवस्था को अपनाने में काफी समय लगेगा। शुरुआत में लेन-देन के तरीकों को अपनाना कठिन लग सकता है लेकिन यह सुनिश्चित करेगा कि देश ने एक पारदर्शी अर्थव्यवस्था की ओर अपना पहला कदम बढ़ाया। नकदी समाप्त होने का विचार दूर की कौड़ी लग सकता है लेकिन निश्चित रूप से नकदी अब धीरे-धीरे बाहर होने की कगार पर है।

प्रधानमंत्री ने इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लालकिले से कहा-आई टी भारत को वैसे ही जोड़ती है जैसे किरलवे जोड़ता था। उन्होंने कहा कि डिजिटल इंडिया हमें दुनिया से

मुकाबला करने के लिए सद्ग्राम बनायेगा। डिजिटल इंडिया में हर गाँव ब्रॉडबैंड से जुड़ना है। ब्रॉडबैंड यानि तेज गति का इंटरनेट कनेक्शन इस तेज इंटरनेट से ऑनलाइन लेक्चर यानि स्कूल, कॉलेजों में पढ़ाई टेली मेडिसिन यानि डाक्टरी मदद हर शख्स तक पहुँचाने की बात कही गयी है। इसके अलावा मोबाइल फोन क्रांति के जरिए गरीबों तक बैंक खोलने और सरकारी सहायता पहुँचाने की बात भी डिजिटल इंडिया का हिस्सा है।

राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने देश में 66वें गणतन्त्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम अपने

से अधिक उपभोक्ताओं ने रसोई गैस सब्सिडी स्वेच्छा से छोड़ी है। इससे वंचित लोगों को रसोई गैस कनेक्शन मुहैया कराने में बहुत मदद हुई है। इसी जनशक्ति ने स्वच्छ भारत मिशन को एक जन आंदोलन में बदल दिया है। 9.8 लाख गाँवों, 850 से ज्यादा शहरों, 99 जिलों तथा 3 राज्यों ने अपने क्षेत्र को खुले में शौच से मुक्त घोषित कर दिया है।

2. वित्तीय समावेशन गरीबी उन्मूलन की कुंजी है। 26 करोड़ से अधिक जन-धन खाते खोलकर लोगों को बैंकिंग व्यवस्था से पहली बार जोड़ा गया है जो एक अभूतपूर्व उपलब्धि है, कैशलेस

वैश्विक डिजिटल

अर्थव्यवस्था की ओर भारत

डॉ० ऋतु कुमारी

संबोधन में देश की उपलब्धियों और चुनौतियों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि हमारी अर्थव्यवस्था चुनौतीपूर्ण वैश्विक आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद अच्छा प्रदर्शन करती रही है। 2016-17 के पूर्वार्द्ध में, पिछले वर्ष की तरह इसमें 9.2 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई और इसमें निरंतर उभार दिखाई दे रहा है। हम मजबूती से वित्तीय दृढ़ता के पथ पर अग्रसर हैं और देश के मुद्रास्फीति का स्तर आरामदायक है। निर्यातों में तेजी आनी यद्यपि अभी बाकी है तथापि विशाल विदेशी मुद्रा भंडार वाले एक स्थिर बाह्य क्षेत्र को हमने कायम रखा है नोटबंदी का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि काले धन को बाहर करते हुए और भ्रष्टाचार गतिविधि में कुछ समय के लिए अधिक से अधिक नकदी रहित होने की अर्थव्यवस्था में पारदर्शिता बढ़ेगी। राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने 31 जनवरी 2017 को संसद् के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि:-

9. देशवासियों ने विशेषकर गरीब तबके के लोगों ने हाल ही में कालेधन के विरुद्ध में असाधारण शक्ति और सहनशीलता का परिचय दिया है। रसोई गैस के मामले में 'गिव इट अप' अभियान की सफलता के पीछे भी यही प्रेरक भावना रही है। 9.2 करोड़

भुगतान के लिए 20 करोड़ से अधिक रुपये डेबिट कार्ड जारी किए गये 'जनधन से जनसुरक्षा' की दिशा में तेजी से आगे बढ़ते हुए लगभग 93 करोड़ करीबों को विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में शामिल किया गया है।

3. गरीब और अब तक जिनको बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध नहीं हैं ऐसे लोगों तक बैंकिंग सुविधाएँ पहुँचाने के लिए भारतीय डाक भुगतान बैंक, इण्डियन पोस्टल डेपॉजिट बैंक प्रारम्भ किया गया है, जिसमें डेढ़ लाख डाकघर, गाँव-गाँव तक फैले हुए हैं। ये डाकघर पोस्टल बैंक के रूप में भी कार्य करेंगे।

4. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के अंतर्गत रु० 2 लाख करोड़ के 5.6 करोड़ ऋण उपलब्ध कराये गये हैं। इससे जरूरतमंद उद्यमियों को विना कोई ऋणाधार बैंक से कर्जा मिल सकेगा। जिससे छोटे व्यवसायों को प्रोत्साहन मिलेगा।

5. सरकार प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से कम ब्याज दरों पर आवास ऋण प्रदान कर बेघर गरीब परिवारों को आश्रय उपलब्ध करने के लिए प्रतिबद्ध है।

6. दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के तहत स्वतंत्रता से अब तक अंधेरे में रह रहे 9,000 गाँवों में से **शेष पृष्ठ 11 पर**

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,

श्री नरेन्द्र मोदी जी,

माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार।

साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-११००११

विषय :- राजनीति व फिल्मों में कास्टिंग काउच के गंभीर आरोपों की जाँच कराने व दोषियों को सजा देने की मांग।
महोदय,

सांसद शत्रुघ्न सिन्हा, रेणुका चौधरी व कोरियोग्राफर सरोज खान ने राजनीति व फिल्म उद्योग में कास्टिंग काउच की प्रथा जारी रहने की जानकारी दी है। यह बहुत ही गंभीर समस्या है। हिन्दुस्तान की संस्कृति में महिलाओं व बेटियों की पूजा करते हैं। परन्तु राजनीति व फिल्म जगत में कास्टिंग काउच के माध्यम से महिलाओं का शोषण देश को शर्मसार करने वाली घटना है। इसे रोकने के लिये निम्न आदेश देने की कृपा करें:-

- (१) राजनीति व फिल्म उद्योग में कास्टिंग काउच की जाँच कराये तथा दोषियों पर कार्रवाई करें।
- (२) संसद में कानून बनाकर संसद व विधानसभाओं की सदस्यता के लिये कास्टिंग काउच न करने का शपथ पत्र सभी उम्मीदवारों के लिये आवश्यक किया जाये।
- (३) कास्टिंग काउच को बढ़ावा देने वाले फिल्म निर्माताओं, निर्देशकों व कलाकारों पर आजीवन प्रतिबंध लगाये।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

(मुन्ना कुमार शर्मा)
राष्ट्रीय महासचिव

(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

सलमान खान की सजा पर हिन्दू महासभा ने प्रसन्नता व्यक्त की, बरी हुए आरोपियों के विरुद्ध ऊंची अदालत में अपील करे राजस्थान सरकार : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य के द्वारा काला हिरण शिकार केस में जोधपुर के सीजेएम देव कुमार खत्री द्वारा पांच वर्ष की सजा देने पर प्रसन्नता व्यक्त किया है तथा कहा है कि न्याय की जीत हुई है। बिना प्रभाव या दबाव में आकर निर्णय देने के लिये सीजेएम देव कुमार खत्री बधाई के पात्र हैं। वहीं हिन्दू महासभा नेताओं ने राजस्थान की वसुंधरा राजे सिंधिया सरकार से अभिनेता सैफ अली खान, अभिनेत्री नीलम, सोनाली, तब्बू, दुश्यंत सिंह सहित सभी बरी किये गये आरोपियों के विरुद्ध ऊंची अदालत में अपील करने की मांग की है। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि सलमान खान के साथ-साथ ये लोग भी काला हिरण शिकार के दोषी हैं। इसलिये इन्हें भी सजा मिलनी चाहिए। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि इस मामले में महासभा द्वारा विश्वासी समाज का पूरा सहयोग किया जायेगा।

शेष पृष्ठ 1 का गौहत्याओं व लवजेहादियों पर.....

वाममोर्चा सरकार प्रदेश में हिन्दुओं के साथ हो रहे अन्याय पर केवल चुप ही नहीं, बल्कि हिन्दू विरोधियों को बढ़ावा दे रही है। उन्होंने कहा कि इसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने आरोप लगाया है कि केरल में गौहत्या बड़े पैमाने पर हो रहा है। जहां अधिकांश राज्य

सरकारों ने गौहत्या पर प्रतिबंध लगा दिया है, वहीं केरल में गौहत्या पर प्रतिबंध न होने के कारण गौमाता की हत्या की जा रही है। उन्होंने गौहत्या पर तुरन्त प्रतिबंध लगाने की मांग की है। श्री शर्मा ने आरोप लगाया कि केरल में मुस्लिम युवकों द्वारा हिन्दू लड़कियों को बहला-फुसलाकर, जाल में फंसाकर तथा डराकर धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है। पहले हिन्दू लड़कियों से विवाह किया जा रहा है तथा बाद में उसका धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है। हिन्दू महासभा नेताओं ने चेतावनी दिया है कि यदि लव जेहाद व गौहत्या शीघ्र बन्द नहीं हुआ, तो हिन्दू महासभा कार्यकर्ता स्वयं कार्रवाई कर इसे रोकेंगे। संवाददाता सम्मेलन में केरल प्रदेश अध्यक्ष किशन सी. जे. व प्रदेश महासचिव चिनाय श्री निवासन उपस्थित थे।

शेष पृष्ठ 8 का अवधपुरी यह चरित.....

कारण हमारा भविष्य क्या होगा? प्रायः प्रत्येक राजा ने कोई-न-कोई ऐसे लाल पाल रखे हैं। गुरुकुल चाहे अभावों में उजड़ जाएँ, वेतन बिना बिगाड़ कर सैनिक चाहे मेहनत-मजदूरी करने चले जाएँ किन्तु सरस्वती के ये सगे सपूत यदि सभा में नहीं तो मानो सुंदरी सिंदूर विहीनी-ऐसी दुर्दशा देश की।

गंग और होल को मौन देखकर गोस्वामी जी इतना ही बोले, "चरित्र के लिए एक कुठार तो एक दीमक, चलो, अब संध्या होती आ रही है। स्नानादि से निवृत्त होकर जो आपका पूजन-फलाहारादि का नियम हो उसका पालन कीजिए।" गंग तो जहाँ वीरबल ठहरे हुए थे, वहाँ चले गए। टोडरमल भी स्नान करने के पश्चात् आने की बात करके, शीघ्रता से गंगातट की ओर निकल गए। होल को कान पर यज्ञोपवीत चढ़ाते देखकर माधवदास ने कुटिया में रखा एक लोटा उठाकर देते हुए बोले परिहास में कहा, "इसे निवृत्त होने के पश्चात् भेंट मानकर, चाहें तो दिल्ली ले जा सकते हैं।" होल भी कहाँ चूकने वाले थे, तुरन्त कह उठे-

'लोटा तुलसीदास का, लाख टका को मोल।'

खड़े होते हुए गोस्वामी भी हँसते हुए बोले-

'मोल-तोल कछु है नहीं, लेहुँ राय कवि होल।।'

कुटिया ठहाकों से गूँज उठी। कुटिया से निकलते-निकलते सिर खुजाते हुए माधव बोले, "क्या कहे, बातें तो कई हैं किन्तु अलाउद्दीन ने पद्मिनी के लिए चित्तौड़ पर आक्रमण किया, हम उसकी तो निंदा कर रहे हैं किन्तु जगनिक ने परिमान रासो, जो आजकल आल्हाखंड कहलाता है, उसमें और पृथ्वीराज रासों में भी कुछ को छोड़कर प्रायः समस्त युद्धों का कारण एक ही दर्शाया है कि 'जाकी बिटिया सुंदर देखी, ता पै तान दर्ई तरवार' उस पर क्यों मौन हो जाते हैं?"

(शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 1 का राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने केरल प्रदेश.....

कृतसंकल्प रहने का आह्वान किया। राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने कार्यकर्ताओं से हिन्दू विरोधियों का डटकर मुकाबला करने का आह्वान किया तथा कहा कि हिन्दू विरोधी तत्वों द्वारा तत्वों द्वारा हिन्दुओं के उत्पीड़न को रोकना तथा हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन को रोकना हमारा लक्ष्य है।



हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 7 का राजनैतिक कर्मजों का.....

मानवीय आधार पर यह नीतियां न्यायसंगत कैसे हो सकती हैं? क्या वर्ग विशेषों के अतिरिक्त देश पर किसी और समाज का आधिपत्य नहीं है? क्या सामान्य वर्गों के मौलिक अधिकारों में विभिन्न प्रकार के वैधानिक व राजनैतिक प्रावधानों के हस्तक्षेप होने से उनका प्रत्यक्ष उत्पीड़न नहीं हो रहा है? समाज को विभाजित करने वाली ऐसी व्यवस्था से प्रगतिशील समाज व मानवाधिकार कब तक मौन रहेगा? जब न्याय सम्पूर्ण समाज के लिए बराबर का अधिकार प्रदत्त करता है तो किसी एक को अधिक और दूसरे को कम देने का भेदभाव नहीं करता। न्याय तो जीवन के मौलिक अधिकारों की रक्षा का संरक्षण करके उसको उन्नति की ओर ले जाने के लिए होता है। जब यह माना जाता है कि न्याय एक स्वतंत्र तत्व होने के कारण दोषपूर्ण कानूनों का दास नहीं है, तो फिर ऐसे दोषपूर्ण व मानव विरोधी व्यवस्थाओं का क्या औचित्य है?

आज जब देश को अखंड रखने की चुनौती से जूझना पड़ रहा है तो ऐसे में राष्ट्रहित को सर्वोपरि मान कर सभी देशवासियों के लिए एक समान व्यवस्था को क्यों नहीं लाया जाता? क्या हमारे देश की लोकतांत्रिक प्रणाली कभी अल्पसंख्यकवाद, जातिवाद व दलितवाद से मुक्त हो पायेगी? क्या हमारे राजनैतिक दल कभी अपने स्वार्थों से ऊपर उठकर कोई राष्ट्रव्यापी सोच विकसित कर पायेंगे? आज राष्ट्र की एकता व अखंडता की रक्षा के लिये किसी भी वर्ग को दिये जाने वाले विशेषाधिकारों को प्रतिबंधित करने के लिये सार्वजनिक मंचों पर राजनेताओं, अधिकारियों, बुद्धिजीवियों व समाज सेवियों को वैचारिक मंथन करना होगा। साथ ही लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिये राजनीति को व्यापक राष्ट्रनीति में परिलक्षित करने के लिये राजनैतिक कर्मजों के अभाव को भी दूर करना होगा। सामान्यतः यह धारणा बनी हुई है कि राजनीति में धन व बाहुबलियों का वर्चस्व बढ़ने से सुशिक्षित, समर्पित, सुयोग्य व समाज की सेवा में सक्रिय राष्ट्रभक्तों का अभाव हो रहा है। परंतु राजनीति से अपने को पृथक् रखने वाले सभी बुद्धिजीवियों व उद्योगपतियों आदि को यह समझना चाहिये की देश की शासकीय व्यवस्था को कुशल व योग्य व्यक्तियों का मार्गदर्शन मिले। याद रखो आचार्य चाणक्य का विचार था कि राजनीति सबसे उत्तम व पुण्य कार्य है परंतु अगर सज्जन और योग्य व्यक्ति राजनीति में सक्रिय नहीं होंगे तो उनको अपने ऊपर अयोग्य व दुर्जन व्यक्तियों द्वारा शासित होने के पाप का भागी बनना होगा।

:- तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....	150/- रुपये
द्विवार्षिक.....	300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....	1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

“हिन्दू सभा वार्ता” के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चेक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथक्तावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अन्तर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामूलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नहीं, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।

आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 2 का जीवन का लक्ष्य.....

करते हैं, बस उसी क्षण जीवन की सारी परेशानी जड़मूल से मिट जाती है और प्रभु मिल जाते हैं। हमारे सन्तों, भक्तों एवं ग्रन्थों ने भी हमें ऐसा आश्वासन दिया है। श्रीरामचरित मानस में गोस्वामी जी कहते हैं।

सनमुख होइ जीव मोहिं जबहीं।

जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं॥

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति॥

(गीता ६/३१)

हम भजन करें अथवा विश्वास? : मानव मात्र को करने की सामर्थ्य प्राप्त है। इसलिये उसमें करने की रुचि रहती है। जब तक हममें करने की सामर्थ्य है और करने की रुचि है, तब तक हमें अपने-अपने विश्वास, रुचि और सामर्थ्य के अनुसार भजन करना चाहिये, लेकिन उस भजन के बदले भगवान से कोई भी सांसारिक वस्तु नहीं मांगनी चाहिये। अनेक भाई-बहन प्रभु से स्पष्ट रूप से कुछ भी नहीं मांगते, लेकिन उनके हृदय में यह भाव रहता है कि यदि हम भजन करेंगे तो हमारे परिवार में कुशल मंगल रहेगा, हम पर कोई परिवार में कुशल मंगल रहेगा, हम पर कोई विपत्ति नहीं आयेगी। ऐसा सोचना अप्रत्यक्ष रूप से मांगना ही है। भजन करें, लेकिन उसके बदले प्रभु से केवल उनका विश्वास मांगें, विश्वास के लिये भजन करें। गोस्वामी जी महाराज ने मानस में यही कहा है—

सबु करि मांगहिं एक फलु राम चरन रति होउ॥ (रा.च.मा. २/१२६)

जप तप नियम जोग निज धर्मा।

श्रुति सम्भव नाना शुभ कर्मा॥

ग्यान दया दम तीरथ मज्जन।

जहं लगी धर्म कहत श्रुति सज्जन॥

जो साधक भगवान का विश्वास पाने के लिये भजन करता है, प्रभु अपनी अहेतुकी कृपा से उसे अपना विश्वास प्रदान करके उसके जीवन को सफल बना देते हैं।

शेष पृष्ठ 9 का वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था.....

११,००० गाँवों में रिकार्ड समय में बिजली पहुँचायी गयी है। उजाला (उन्नत ज्योति बाई अफोर्डेबल एलर्डी फॉर ऑल) कार्यक्रम के अंतर्ग २० करोड़ से अधिक एलईडी बल्ब वितरित किये जा चुके हैं जिससे उपभोक्ताओं के बिजली के बिलों में रु० १०,००० करोड़ से अधिक की बचत हुई है। इनमें से अधिकांश उपभोक्ता गरीब तबके के हैं।

७. अपने देश के प्रत्येक नागरिक के लिए और विशेष रूप से गरीबों के लिए स्वास्थ्य सुविधाएँ किफायती और सुगम बनाने के लिए अनेक कदम उठाये गये हैं। इन्द्रधनुष मिशन हर बच्चे को हर जगह निवारणीय बीमारियों से टीकाकरण के लिए प्रतिबद्ध है। इससे अभी तक ५५ लाख बच्चों को लाभ दिया जा चुका है। ‘प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना’ का प्रारंभ किया गया है। इस्फलाइटिस को नियंत्रित करने के लिए इस बीमारी से होनेवाली मृत्यु दर में कमी आयी है।

८. सरकार ने किसानों के जीवन में बदलाव लाने के लिए कई कदम उठाये हैं जो कृषि क्षेत्र के संपूर्ण विकास पर केन्द्रित हैं जैसे सस्ता ऋण उपलब्ध कराना बीज और उर्वरकों की आपूर्ति सुनिश्चित करना सिंचाई सुविधाओं को बेहतर बनाना, व्यापक जोखिम सुरक्षा, मृदा स्वास्थ्य कार्ड के माध्यम से बेहतर उत्पादकता ई राष्ट्रीय कृषि बाजार के माध्यम से उत्पादन के लिए सुनिश्चित बाजार और लाभकारी कीमतें आदि।

६. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में जोखिम कवरेज को विस्तृत किया गया है। बीमा राशि को दोगुना किया गया है और किसानों के लिए प्रीमियम राशि को अब तक के न्यूनतम स्तर पर लाया गया है। वर्ष २०१६ खरीफ फसल को अवधि के दौरान, लगभग ३.६६ करोड़ किसानों के लिए रु० १४ लाख करोड़ की राशि का बीमा किया गया।

१०. किसान क्रेडिट कार्डों को डिजिटल बनाने के उद्देश्य से मौजूदा कार्डों के अलावा तीन करोड़ कार्डों को जल्द ही रुपये डेबिट कार्डों में बदला जाएगा। नाबार्ड निधि की राशि को दोगुना करके इकतालिस हजार करोड़ रुपये किया गया है ताकि सभी किसानों को आसानी से ऋण उपलब्ध हो सके।

११. ‘हर बूँद अधिक फसल तथा हर खेत को पानी’ को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना का कवरेज बढ़ाया गया है। पिछले दो वर्षों के दौरान १२.७ लाख हेक्टेयर से ज्यादा भूमि पर सूक्ष्म सिंचाई की व्यवस्था की गयी है।

उपर्युक्त योजनाओं, इंटरनेट एवं साक्षरता मिशन के तहत हमारे देश की साक्षरता में चार गुनी वृद्धि हुई है। आज विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से बढ़ रही हमारी अर्थव्यवस्था है। हम वैज्ञानिक और तकनीकी जनशक्ति के दूसरे सबसे बड़े भंडार, तीसरी सबसे विशाल सेना, न्यूक्लीयर क्लब के छठे सदस्य अंतरिक्ष की दौड़ में शामिल छठे सदस्य और दसवीं सबसे बड़ी आद्यौगिक शक्ति है। एक निर्बल खाद्यान्न आयातक देश से भारत अब खाद्य वस्तुओं का एक अग्रणी निर्यातक बन गया है। अब पूरे देश का यही नारा है: जगेगा इंडिया, बढ़ेगा इंडिया।

१. कुरुक्षेत्र अप्रैल २०१६ २. योजना फरवरी २०१७ ३. प्रतियोगिता दर्पण मार्च २०१७

यह भी सच है

राजनीति का हिन्दूकरण, हिन्दुओं का सैनिकीकरण, सैनिकों का आधुनिकीकरण

सादर आमंत्रण

अखिल भारत हिन्दू महासभा के तत्वावधान में स्वातंत्र्य वीर सावरकर जयंती समारोह 2018

देशभक्ति गीतों की एक शाम वीर सावरकर के नाम

हवन : सांय 6.00 बजे
सांस्कृतिक कार्यक्रम : प्रख्यात गायक एस.डी. सिंह एण्ड पार्टी द्वारा
अध्यक्षता : श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय अध्यक्ष,
अखिल भारत हिन्दू महासभा

दिन व तिथि : सोमवार, 28 मई 2018
समय : सांय 6:00 बजे से
सहभोज : रात्रि 9:00 बजे
स्थान : हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (निकट बिड़ला मंदिर)

आपसे अनुरोध है कि राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को
मजबूत बनाने के लिये कार्यक्रम में सपरिवार व मित्रों
सहित समय से पधारने की कृपा करें।

निवेदक

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महामंत्री

वीरेश त्यागी
प्रदेश महामंत्री

अखिल भारत हिन्दू महासभा

केन्द्रीय कार्यालय : हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली -110001

दूरभाष : 011-23365138, 23365354

Email : info@akhilbharathindumahasabha.org

akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com

Website : www.akhilbharathindumahasabha.org

कबिरा खड़ा बजार में

धर्म परिवर्तन मानवाधिकार का हनन



80 के दशक में एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी, उसका नाम था कैसे बनें बॉस? मूलरूप से यह विदेश में प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद था। उस समय मैं विद्यार्थी था। रेलवे स्टेशन मुरादाबाद के एक बुक स्टाल से यह पुस्तक तीन रुपये में खरीदी थी। मेरे पढ़ने के पश्चात किसी मित्र ने पढ़ने के लिये मांगी लेकिन वापस नहीं की, प्रायः पुस्तकों के साथ ऐसा ही होता है। इस पुस्तक में बॉस को वास्तविक बॉस बनने के गुण सिखाये गये थे। ये गुण सकारात्मक न होकर पूरी तरह से नकारात्मक विधियों पर आधारित थे। उसमें पहला सूत्र यह था कि किसी भी अधीनस्थ कर्मचारी की पूरी बात सुनने के पश्चात भी यह दिखाने का प्रयास करो कि आपने वह बात सुनी नहीं है। यदि उस बात का सम्बन्ध कर्मचारी के हित से है, तो कम से कम दो-तीन बार कहने के पश्चात सुनने का संकेत दो। लेकिन हर दम उत्तर भी मत दो। कुछ देर मौन रहो और फिर इस प्रकार का उत्तर दो जिसमें स्वीकृति भी अस्वीकृति हो जाये। इसके पश्चात अधीनस्थ कर्मचारी पुनः विनीत करेगा, यदि अति आवश्यक होगा या वह किसी परेशानी में होगा तो हाथ जोड़ सकता है। जब वह अतिविनम्र भाव से निवेदन करें तो केवल इतना कहें कि देगे, थोड़ी देर बाद आना। इसके पश्चात वह कर्मचारी संशय की स्थिति में रहेगा और बॉस की श्रेष्ठता को स्वीकार करने के लिये विवश हो जायेगा। जब वह पुनः ऑफिस में आये तो पहले उसके काम की कुछ गलतियाँ गिना दो। चाहे गलती हो या न हो फिर भी उसे अयोग्य सिद्ध करने का प्रयास करो। इससे पद और शक्ति का प्रदर्शन होता है। लोगों को ज्ञात होता है कि साहब! बहुत शक्तिशाली हैं और संस्था के प्रति बहुत जिम्मेदार हैं। उस पुस्तक में यह लिखा था कि तुरन्त कार्य करने से पद का महत्त्व कम हो जाता है। अधीनस्थ व्यक्ति जितने परेशान होंगे और काम में देरी होगी, उससे यह भी ज्ञात होगा कि कार्य कितना जटिल और असम्भव था लेकिन साहब! ने करवा ही दिया। उसमें एक और सूत्र लिखा था कि यदि आपको प्रभावशाली बॉस बनना है कि आफिस समय पर कभी न आये। कम से कम एक घंटा विलम्ब से पहुंचे। आफिस पहुंचते ही उपस्थिति पंजिका मंगवाये और देखें कि कौन-कौन कार्यालय आया है। यदि कोई आ भी गया है और आपने देख भी लिया है तो भी उसके हस्ताक्षर प्रकोष्ठ में लाल पैन चला दी जियेगा। फिर घंटी बजाकर अपने निष्ठावान चमचे को बुलाइये। वह चपरासी या लिपिक या कुछ और भी हो सकता है। उससे पूछें कि कौन-कौन कितने बजे आया था, देरी से कौन-कौन आया? चमचे के कथन को सत्य स्वीकार करते हुए सबको चेतावनी का क्रम शुरू करें। आवाज कड़क हो, घृणा के भाव हों और स्वयं को यह सिद्ध करने की कोशिश करें कि वे ही इस कार्यालय के स्वामी और संचालक हैं। शेष कर्मचारी केवल वेतन लेने और मस्ती के लिये कार्यालय आते हैं। इस पुस्तक को पढ़े हुए तीस वर्ष से अधिक समय हो गया। परिस्थितियां बदल गई। कार्यालय की कार्यशैली बदल गई। लेकिन सरकारी और अर्ध शासकीय कार्यालय में ऐसे बॉसों की कमी नहीं है जो शोषण के सूत्र पर चलते हैं। वैसे वह पुस्तक व्यंग्य में थी लेकिन इसे व्यवहार में ग्रहण करने वालों की कमी नहीं।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)-11/6129/2016-17-18



साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

दिनांक 23 मई से 29 मई 2018 तक

रजि. सं. 29007/77

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।